भूमिका

हिंदी-साहित्य के सुचारु अध्ययन के लिए अलंकारों का ज्ञान
वश्यक है। हिन्दी में इस विषय पर अनेकों अच्छे-अच्छे ग्रंथ
परन्तु अलंकार-शास्त्र में प्रवेश करने की इच्छा करनेवाले
धारण विद्यार्थियों के काम का उनमें से कोई भी नहीं है। प्रस्तुत
क ऐसे ही लोगों के लिए तैयार की गई है। इसमें निम्न-
खित विशेषतायें पाई जायँगी—

(१) यह पुस्तक आधुनिक शैली पर लिखी गई है।

(२) इसमें प्रत्येक अलंकार को अच्छी तरह स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है। सब लक्षण इसी बात को ध्यान में रखकर बनाये गये हैं कि वे सरल हों और अलंकार-संबन्धी प्रत्येक बात को स्पष्ट कर दें। पुस्तक प्रारंभिक विद्यार्थियों के लिए लिखी गई है, इसलिए लक्षणों की वैज्ञानिक शुद्धता का विशेष ध्यान नहीं रखा गया है, परंतु इसका यह मतलब नहीं कि वे कहीं भी अशुद्ध हैं।

(३) उदाहरण प्रधानतया आधुनिक साहित्य-ग्रंथों से लेकर दिये गये हैं, जिससे उनको समझने में विशेष परिश्रम न करना पड़े। प्राचीन उदाहरण विशेष करके राम-चरितमानस से लिये गये हैं।

(४) उदाहरण पर्याप्त और प्रत्येक प्रकार के दिये गये हैं। पहले कई उदाहरणों में लक्षण को घटा करके समझाने का प्रयत्न किया गया है और बाकी उदाहरणों को अलग विशेष उदाहरण-शीर्षक के नीचे दिया गया है।

(५) अभ्यासार्थ प्रश्न भी दिये गये हैं, जिनसे अध्ययन में विशेष सहायता मिलेगी।

इस पुस्तक को तैयार करने में मैंने श्रीयुत अर्जुनदास केडिया के भारती-भूषण और पूज्य गुरुवर लाला भगवानदास की अलंकार-मंजूषा से यत्र-तत्र लाभ उठाया है। छेकानुप्रास और वृत्त्यनुप्रास के लक्षण में इन्हीं का अनुसरण किया गया है, यद्यपि मेरी सम्मति में वह ठीक नहीं है। लाटानुप्रास को मैंने अनुप्रास का भेद न मानकर अलग अलंकार माना है और वीप्सा और पुनरुक्त-प्रकाश को अलग-अलग न मानकर मिला दिया है।

शांति-आश्रम, बीकानेर
भाद्र-पूर्णिमा, १९८९

विनीत
नरोत्तमदास स्वामी

अनुक्रमणिका

सरल अलंकार

(प्रथम भाग)

अलंकार

अलंकरोतीति अलंकारः। अलंकार का अर्थ है गहना। जिस प्रकार गहना मनुष्य के शरीर की शोभा बढ़ा देता है उसी प्रकार काव्य के शब्द और अर्थ रूपी शरीर की शोभा अलंकार बढ़ाते हैं।

जिस प्रकार बिना गहनों के भी मनुष्य मनुष्य हो सकता है उसी प्रकार बिना अलंकार के भी काव्य हो सकता है पर अलंकार हो तो शोभा और बढ़ जायगी। अलंकार काव्य के लिये आवश्यक नहीं हैं परन्तु उनका होना रुचिकर है।

किसी बात को चमत्कारपूर्ण ढङ्ग से वर्णन करने का नाम अलंकार है। अलंकार के द्वारा शब्द या अर्थ मे चमत्कार उत्पन्न होता है और इससे वर्णन रोचक बन जाता है।

कुछ लोग अलंकारों को ही सर्वोत्तम कविता बतलाते हैं पर यह उचित नही है। काव्य की आत्मा अलंकार नही किन्तु रस (या ध्वनि) है।

अलंकारों के भेद

अलकारो के तीन भेद होते हैं—

(१) शब्दालंकार—जहाँ केवल शब्द मे चमत्कार हो।

(२) अर्थालंकार—जहाँ केवल अर्थ मे चमत्कार हो।

(३) उभयालंकार—जहाँ शब्द और अर्थ दोनो मे चमत्कार हो।

(१) शब्दालंकार मे यदि चमत्कारवाले शब्द (या शब्दो) को निकाल कर उसके (या उनके) स्थान पर उसी अर्थ का दूसरा (या दूसरे) शब्द रख दे तो वाक्यार्थ वही रहने पर भी अलकार नष्ट हो जायगा।

शब्दालंकार का उदाहरण—

सत्य सनेह सील सुख सागर

इसमें 'स' वर्ण कई बार आया है। यहाँ अनुप्रास शब्दालंकार है।

(२) अर्थालंकार मे शब्द के बदल देने पर भी अलंकार स्थिर रहता है—

अर्थालंकार का उदाहरण—

राधा वदन चन्द सो सुन्दर

यहाँ उपमा अर्थालंकार है।

(३) उभयालंकार का उदाहरण—

मुख मयंक सम मंजु मनोहर

यहाँ अनुप्रास और उपमा दोनो अलंकार विद्यमान हैं।

शब्दालंकार

जहाँ शब्द में चमत्कार हो वहाँ शब्दालंकार होता है।

शब्द में चमत्कार होना इसलिये कहा गया है कि यदि उस शब्द को बदलकर उसकी जगह उसका पर्याय (अर्थात् वैसा ही अर्थ रखनेवाला) शब्द रख दिया जाय तो वाक्य का अर्थ वही रहने पर भी, चमत्कार नहीं रह जाता। शब्द के बदलते ही चमत्कार मिट जाता है। यथा—

कानन कठिन भयंकर भारी
घोर घाम हिम वारि बयारी

पहली पंक्ति में 'क' और 'भ' का, और दूसरी पंक्ति में 'व' और 'ब' का अनुप्रास शब्दालंकार है। यदि हम इन पंक्तियों को यों कर दें—

विपिन कठोर सुदारुण भारी
उग्र घाम हिम पानि बयारी

तो वाक्यार्थ वही रहने पर भी 'क', 'भ', 'व' और 'ब' का अनुप्रास अलंकार नहीं रह जाता।

यदि शब्द को बदल देने पर भी अलंकार कायम रहे तो वह शब्दालंकार नहीं होगा।

शब्दालंकार के मुख्य १० भेद हैं—

१ अनुप्रास	२ लाटानुप्रास
३ वीप्सा	४ यमक
५ श्लेष	६ वक्रोक्ति
७ पुनरुक्तिवदाभास	८ भाषासम
९ प्रहेलिका	१० चित्र

---

१ अनुप्रास

एक वर्ण या अनेक वर्णों की आवृत्ति को अनुप्रास कहते हैं।

टि० १—वर्ण या वर्णों के एक से अधिक बार आने का नाम आवृत्ति है।

टि० २—व्यंजन वर्णों की आवृत्ति हो तो यह आवश्यक नहीं कि उनके स्वर भी बराबर मिलें।

उदाहरण

(१) सत्य सनेह सील सुख सागर

इस पंक्ति में एक व्यंजन वर्ण 'स' कई बार आया है। इसलिये यहाँ 'स' का अनुप्रास है। यहाँ 'स' की चार आवृत्तियाँ हुई हैं। प्रथम बार (अर्थात सत्य और सनेह में) स के स्वर की भी आवृत्ति हुई है। पीछे तीन बार (अर्थात सील, सुख और . में) 'स' के स्वर की आवृत्ति नहीं हुई। इस प्रकार अनुप्रास में व्यंजन वर्णों के स्वरों का मिलना आवश्यक नहीं।

(२) निपट नीरव नन्द-निकेत में

पंक्ति में एक व्यंजन वर्ण 'न' का अनुप्रास है। निपट,

नीरव और नंद मे स्वर नहीं मिलता। निपट और निकेत मे स्वर मिलता है।

अनुप्रास के भेद

अनुप्रास के तीन भेद होते हैं—

(१) छेकानुप्रास

(२) वृत्त्यनुप्रास

(३) श्रुत्यनुप्रास

(१) छेकानुप्रास

जहाँ एक या अनेक वर्णों की एक ही वार आवृत्ति हो वहाँ छेकानुप्रास होता है। आवृत्ति प्रायः या तो शब्दों के आरंभ मे होती है या अन्त मे। इस प्रकार छेकानुप्रास के चार रूप हो सकते हैं, यथा—

(१) एक वर्ण की आरंभ में आवृत्ति

(२) एक वर्ण की अत में आवृत्ति

(३) अनेक वर्णों की आरभ मे आवृत्ति

(४) अनेक वर्णो की अन्त मे आवृत्ति

उदाहरण

एक वर्ण की आरंभ में

(१) कानन कठिन भयंकर भारी

घोर घाम हिम वारि बयारी ।

यहाँ कानन और कठिन मे 'क' की आवृत्ति हुई है अर्थात् 'क' दो बार आया है। इसलिये यहाँ छेकानुप्रास है। यहाँ 'क' की आवृत्ति शब्दो के आरंभ मे है।

इसी प्रकार भयंकर और भारी में 'भ' की, घोर और घाम मे 'घ' की एवं वारि और बयारी मे 'व' की आवृत्ति शब्दों के आरंभ में हुई है। इनमें भी छेकानुप्रास है।

(२) सेवा-समय दैव वन दीन्हा
मोर मनोरथ सुफल न कीना

यहाँ सेवा और समय में 'स' का,
दैव और दीन्हा में 'द' का, एवं
मोर और मनोरथ में 'म' का छेकानुप्रास है।
यह अनुप्रास भी आरंभ में है।

शब्द वर्णों की अन्त में

(१) तदपि पुरी न व्यथा-कथा हुई
यहाँ व्यथा और कथा के अन्त मे 'थ' की आवृत्ति हुई है इसलिये यहाँ अन्त मे छेकानुप्रास है।

(२) कानन कठिन भयंकर भारी
घोर घाम हिम वारि बयारी
यहाँ कानन और कठिन के अन्त में 'न' का,

भयकर और भागी के अन्त मे 'भ' का,
घाम और हिम के अन्त में 'म' का, एव
बारि और बयारी के अन्त में 'र' का छेकानुप्रास है।

(३) रूखा सूखा खाइ कै ठंढा पानी पीव

यहाँ रूखा और सूखा के अन्त में 'ख' का अनुप्रास है।

अनेक वर्णों की आरम्भ में

(१) कारन तें कारज कठिन होइ दोष नहिं मोर
कुलिस अस्थि तें, उपल तें लोह कराल कठोर

यहाँ कारन और कारज में 'क' और 'र' इन दो वर्णों की आवृत्ति हुई है। यहाँ आरम्भ में इन दो वर्णों का छेकानुप्रास है।

(२) विविध सरोज सरोवर फूले

यहाँ सरोज और सरोवर में 'स' और 'र' इन दो वर्णों की आवृत्ति शब्दों के आदि में हुई है अत' यहाँ आरम्भ का छेकानुप्रास है।

(३) मेरे इस निश्चल निश्चय ने
झट से हृदय किया हलका

यहाँ निश्चल और निश्चय मे 'न' और 'श्च' इन दो वर्णो को आवृत्ति हुई है।

यहाँ दूसरी पंक्ति में 'लिका' ये दो वर्ण तीन बार आये हैं। अतः यहाँ 'ल क' इन दो वर्णों का वृत्त्यनुप्रास है।

विशेष उदाहरण

(१) घहरती घिरती दुख की घटा

(२) छलकती मुख की छविपुंजता
छिटकती छिति पै तन की छटा

(३) बहु विनोदित थीं ब्रज-बालिका
तरुणियाँ सब थीं तृण तोड़तीं

(४) सासु ससुर गुरु सुजन सहाई
सुत सुंदर सुसील सुखदाई

(५) विराजिता थी वन में विनोदिता
महान मेधाविनि माधवी लता

(६) विलोकते ही उसको वराह की
विलोप होती वर वीरता रही

(७) पग हित जिसके मैं नित्य ही हूँ बिछाती
पुलकित पलकों के पाँवड़े प्यार द्वारा

(८) काले कुत्सित कीट का कुसुम में कोई नहीं काम था।

(२) कभी बजेगी अब क्या न बाँसुरी
रसोदरी मुग्धकरी सुधाभरी ?

यहाँ बाँसुरी, रसोदरी, मुग्धकरी और सुधाभरी इन शब्दों के अन्त में 'री' वर्ण की कई आवृत्तियाँ हुई हैं। अतः यहाँ 'र' का वृत्त्यनुप्रास है।

(३) मन काँचे नाचे वृथा साँचे राचे राम

यहाँ 'च' का वृत्त्यनुप्रास अंत मे है।

अनेक वर्णों की आरम्भ में

(१) सखि सिख सीखि नवेलिया कीन्हेसि मान

यहाँ 'स' और 'ख' इन दो वर्णों की अनेक आवृत्तियाँ हुई हैं अतः यहाँ दो वर्णों का वृत्त्यनुप्रास है।

(२) विनता-सुअन हो के विनत हरि से विनय करने लगे

यहाँ 'व' और 'न' इन दो वर्णों का वृत्त्यानुप्रास है।

अनेक वर्णों की अन्त में

(१) मदन हैं तजतीं बहु बालिका
उमगतीं ठगतीं अनुरागतीं

यहाँ दूसरी पंक्ति में 'गती' ये दो वर्ण तीन बार आये हैं अतः यहाँ 'ग त' दो वर्णों का वृत्त्यनुप्रास है।

(२) किसलिये वन कानन में उठी
मृगनिका नलिका-उर-बालिका ?

वर्ण	उच्चारण का स्थान	वर्णो का नाम
अ आ क ख ग घ ङ ह	कंठ	कंठ्य
इ ई च छ ज झ ञ य श	तालु	तालव्य
ऋ ॠ ट ठ ड ढ ण र ष	मूर्धा	मूर्धन्य
लृ त थ द ध न ल स	दन्त	दन्त्य
उ ऊ प फ ब भ म	ओष्ठ	ओष्ठ्य
ए ऐ	कंठ-तालु	कंठ-तालव्य
ओ औ	कंठ-ओष्ठ	कंठौष्ठ्य
व	दन्त-ओष्ठ	दंतौष्ठ्य
ङ ञ ण न म	नासिका भी	नासिक्य

श्रुत्यनुप्रास में या तो बहुत से कंठ्य वर्णो का प्रयोग होता है या तालव्य या मूर्धन्य या दन्त्य या ओष्ठ्य वर्णो का। इसी प्रकार नासिक्य आदि वर्णो का भी श्रुत्यनुप्रास हो सकता है।

उदाहरण

(१) तुलसिदास सीदत निसिदिन देखत तुम्हारि निठुराई

यहाँ बहुत-से दन्त्य वर्णों का प्रयोग हुआ है, यथा—
त ल स द स स द त न स द न द त त न।

(२) ता दिन दान दीन्ह धन धरनी

यहाँ भी बहुत-से दन्त्य वर्ण प्रयुक्त हुए हैं, यथा—
त द न द न द न ध न ध न।

(३) दिनान्त था, थे दिननाथ डूबते।
सधेनु आते गृह ग्वाल-बाल थे॥

यहाँ भी बहुत-से दन्त्य वर्ण प्रयुक्त हुए हैं, यथा—
द न त थ थ द न न थ त स ध न त ल ल थ।

२ लाटानुप्रास

लाटानुप्रास मे शब्द की आवृत्ति होती है अर्थात् एक ही शब्द एक से अधिक वार आता है। प्रत्येक वार अर्थ वही रहता है, भिन्न नहीं होता किंतु प्रत्येक आवृत्ति मे उसका अन्वय भिन्न होने से तात्पर्य भिन्न हो जाता है।

उदाहरण

(१) हे उत्तरा के धन, रहो तुम उत्तरा के पास ही

यहाँ 'उत्तरा के' शब्द दो वार आया है। दोनों वार अर्थ एक ही है। परन्तु दोनों शब्दों का भिन्न भिन्न शब्दों के साथ अन्वय होने से तात्पर्य भिन्न हो गया है। पहले 'उत्तरा के' शब्द का अन्वय धन के साथ और दूसरे 'उत्तरा के' शब्द का अन्वय पास के साथ हुआ है।

(२) किस लिये तव वालक के लिये
उमड़ती नित है दुख की घटा

यहाँ 'लिये' शब्द की आवृत्ति हुई है। दोनों वार अर्थ एक ही है पर पहले 'लिये' का अन्वय 'किस' के साथ और दूसरे 'लिये' का 'वालक के' के साथ होता है।

विशेष उदाहरण

(१) गमन जो न करें बनती नहीं
गमन से सब भाँति विपत्ति है

(२) प्रियतम, अब मेरा कंठ में प्राण आया
सच-सच बतला दो प्राण-प्यारा कहाँ है ?

(३) यह सब अनचाहा रत्न ले क्या करूँ मैं
वह परम अनूठा रत्न ही नाथ, ला दो

(४) बहु कलप चुकी हूँ दग्ध भी हो चुकी हूँ
जग कर कितनी ही रात मैं खो चुकी हूँ

(५) दुख-निशा न हुई हुई सुख की निशा

(६) हुए कई मूर्च्छित घोर त्रास से
कई भगे, मेदिनि में गिरे कई

(७) यथैव हो पालित काक-अंक में
त्वदीय बच्चे बनते त्वदीय है

(८) व्यथामयी दाहमयी दुखोमयी

(९) सब सुना सब ठौर छिपे गये

(३) प्रिय निठुर हुए हैं दूर हो के दृगों से
मन निठुर बने तू सामने लोचनों के

यहाँ 'निठुर' की आवृत्ति हुई है। दोनों बार अर्थ एक ही है पर पहली बार अन्वय 'हुए हैं' के साथ एवं दूसरी बार 'बने' के साथ होगा।

(४) पूत कपूत तो क्यों धन संचै
पूत सपूत तो क्यों धन संचै

अर्थ—पुत्र कुपुत्र है तो क्यों धन सचय करता है क्योंकि वह सब खो देगा और यदि पुत्र सुपुत्र है तो भी क्यों संचय करता है क्योंकि वह स्वय सचय कर लेगा।

इसमें अनेक शब्दों की आवृत्ति हुई है। प्रत्येक बार हर शब्द का एक ही अर्थ है पर पहली बार अन्वय 'कपूत' के साथ और दूसरी बार 'सपूत' के साथ होने से तात्पर्य भिन्न होगया।

(५) राम हृदय जाके नहीं विपति सुमंगल ताहि
राम हृदय जाके अहै विपति सुमंगल ताहि

अर्थ—जिसके हृदय मे राम नही उसके लिये सुमगल भी विपत्ति है और जिसके हृदय मे राम है उसके लिये विपत्ति भी सुमगल है।

इसमे भी अनेक शब्दो की आवृत्ति हुई है। प्रत्येक वार अर्थ वही है पर क्रमश 'नही' और 'अहै' के साथ अन्वय करने से दोनों पंक्तियों का तात्पर्य भिन्न भिन्न हो जाता है।

विशेष उदाहरण

(१) गमन जो न करे बनती नहीं
गमन से सब भाँति विपत्ति है

(२) प्रियतम, अब मेरा कंठ में प्राण आया
सच-सच बतला दो प्राण-प्यारा कहाँ है ?

(३) यह सब अनचाहा रत्न ले क्या करूँ मैं
वह परम अनूठा रत्न ही नाथ, ला दो

(४) बहु कलप चुकी हूँ दग्ध भी हो चुकी हूँ
जग कर कितनी ही रात मैं खो चुकी हूँ

(५) दुख-निशा न हुई हुई सुख की निशा

(६) हुए कई मूर्च्छित घोर त्रास से
कई भगे, मेदिनि मे गिरे कई

(७) यथैव हो पालित काक-अंक में
त्वदीय बच्चे बनते त्वदीय है

(८) व्यथामयी दाहमयी दुखोमयी

(९) सब सुना सब ठौर छिपे गये

२ वीप्सा

वीप्सा में अर्थ में रोचकता लाने के लिये या जोर देने के लिये या आश्चर्य, आतुरता, हर्ष, शोक, भय, क्रोध आदि मनोवेगों को प्रकट करने के लिये शब्द की आवृत्ति की जाती है।

नोट—(१) वीप्सा में एक ही आवृत्ति होती है, एक से अधिक आवृत्ति होने पर उसे पुनरुक्तिप्रकाश कहते हैं।

नोट—(२) लाटानुप्रास में प्रत्येक बार शब्द का अन्वय भिन्न शब्दों के साथ, या भिन्न प्रकार का, होता है पर वीप्सा या पुनरुक्तिप्रकाश में अन्वय प्रत्येक बार उसी शब्द के साथ और एक-सा होता है।

उदाहरण

(१) गाँव गाँव अस होइ अनन्दा
देखि भानुकुल-कैरव-चन्दा

यहाँ गाँव शब्द की एक आवृत्ति हुई अर्थात् वह दो बार आया है। दोनों बार अर्थ वही है और अन्वय भी एक ही शब्द 'होइ' क्रिया के साथ होता है।

(२) पुनः पुनः कान लगा लगा सुना
व्रजेन्द्र ने ध्वनित घोर शब्द को

यहाँ पुनः और तथा इन दो शब्दों की आवृत्ति हुई है। दोनों बार यही अर्थ है और अन्वय भी एक ही क्रिया सुना के साथ होता है।

(३) गुरुदेव, जाता है समय, रक्षा करो! रक्षा करो!

यहाँ रक्षा करो इन शब्दों की आवृत्ति हुई है।

(४) घनश्याम-छटा लखि कै सखियाँ,
अँखियाँ सुख पाइहैं पाइहैं पाइहैं

यहाँ पाइहैं शब्द की दो आवृत्तियाँ हुई हैं। आवृत्ति होने के कारण अर्थ में रोचकता आगई है।

विशेष उदाहरण

(१) राम राम रट विकल भुआलू

(२) अपार कोलाहल ग्राम में मचा
विषाद फैला व्रज सद्म सद्म में

(३) पिला पिला चंचल वत्स को कहीं
पयस्विनी से पय थे निकालते

(४) गृह गृह अकुलातीं गोप की पत्नियाँ हैं
पथ पथ फिरते हैं ग्वाल भी उन्मना हो

(५) यहर यहर आती दुःख की है घटायें

(६) धीरे धीरे रे मना. धीरे सब कुछ होय

(७) राम जपु राम जपु राम जपु बावरे

(८) बनि बनि बनि युवती चलीं
गनि गनि गनि डग देत
धनि धनि धनि अँखियाँ सुछवि
सनि सनि मनि सुख लेत

—

यमक

यमक मे शब्द या शब्दांश की आवृत्ति होती है। शब्द की आवृत्ति हो तो प्रत्येक बार अर्थ भिन्न होना चाहिये। शब्दांश की आवृत्ति मे कोई अर्थ नहीं होगा।

उदाहरण

(१) मातु चरन सिर नाइ, चले तुरत संकित हिये
वागुर विषम तुराइ, मनहु भाग मृग भाग-वस

अर्थ—श्रीलक्ष्मण माता के चरणों मे सिर नवा कर हृदय में डरते हुए शीघ्रता से चल दिये मानो कठिन जाल को तुड़ाकर कोई मृग भाग्य-वश भाग रहा हो।

यहाँ भाग शब्द की आवृत्ति हुई है अर्थात् वह दो बार आया है। भाग एक पूरा शब्द है। दोनो बार उसका अर्थ भिन्न है—पहली बार 'भागना है' और दूसरी बार 'भाग्य'। अत. यहाँ यमक है।

(२) अपूर्व थी श्यामल पत्र राशि में
कदंब के पुष्प-कदंब की छटा

अर्थ—काले पत्तों के बीच में कदंब पेड़ के पुष्पों की राशि की शोभा अपूर्व थी।

यहाँ कदंब शब्द की आवृत्ति हुई है। प्रथम कदंब का अर्थ है कदंब पेड़ और दूसरे कदंब का अर्थ है राशि या समूह।

(३) बना अतीवाकुल म्लान चित्त को
विदारता था तरु कोविदार का

अर्थ—कोविदार का पेड़ म्लान-चित्त को अतीव व्याकुल बना कर विदीर्ण कर रहा था।

यहाँ विदार इस शब्दांश की आवृत्ति हुई है। विदार दोनों बार ही पूरा शब्द नहीं है। प्रथम विदार 'विदारता' शब्द का और दूसरा विदार 'कोविदार' शब्द का अंश है। शब्दांश होने से निरर्थक यमक है क्योंकि दोनों बार विदार का कोई अर्थ नहीं।

(४) लसी कहीं थी सरसा सरोजिनी
कुमोदिनी मानस-मोदिनी कहीं

अर्थ—कहीं सुन्दर कमलिनी शोभित थी और कहीं मन को मोद देनेवाली कुमुदिनी।

यहाँ 'मोदिनी' की आवृत्ति हुई है। प्रथम मोदिनी कुमोदिनी शब्द का अंश होने से शब्दांश है और निरर्थक है दूसरा 'मोदिनी' (मोद देनेवाली) सार्थक शब्द है। यहा पर शब्द और शब्दांश का सार्थ-निरर्थक यमक है।

(५) ग्रहण है करता जिस युक्ति से
मधुप सारस सार सहर्ष हो

(सारस = कमल । सार = रस, तत्त्व)

यहाँ 'सारस' की आवृत्ति हुई है। प्रथम सारस सार्थक शब्द है। दूसरा सारस शब्दांश और निरर्थक है।

(६) तनिक भीरु कभी रुकते नहीं

यहाँ कभीरु की आवृत्ति है। दोनों बार कभीरु निरर्थक एवं शब्दांश है (इसमे 'भीरुक' का यमक भी हो सकता है)।

विशेष उदाहरण

(१) मूरति मधुर मनोहर देखी
भयउ विदेह विदेह विशेखी

(विदेह—(१) जनक, (२) देहरहित यानी सुधबुध भूला हुआ)

(२) बड़े अनूठेपन साथ था खड़ा
महारँगीला तरु नारँगी बना

(रँगी—निरर्थक शब्दांश)

(३) कलोलकारी खग का कलोलना

(कलोल—निरर्थक शब्दाश)

(४) वह नित कलपाता है मुझे कांत हो के
जिस बिन कल पाता है नहीं प्राण मेरा

श्लेष

जब ऐसे शब्द या शब्दों का प्रयोग किया जाय जिसका या जिनका एक से अधिक अर्थ लिया जाय तो वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

(१) एक से अधिक रखनेवाले शब्द या शब्दों का प्रयोग किया जाय।

(२) ऐसे शब्द या शब्दों के एक से अधिक अर्थ अपेक्षित हों।

उदाहरण

(१) पानी गये न ऊबरै मोती मानुस चून

अर्थ—'पानी' के चले जाने पर मोती, मनुष्य और चून निकम्मे हो जाते हैं।

यहाँ पानी शब्द के तीन अर्थ हैं जो क्रमशः मोती, मनुष्य और चून के साथ लगते हैं—(१) आब या कान्ति, (२) मान-मर्यादा या प्रतिष्ठा, (३) जल। (१) कान्ति बिना मोती किसी काम का नहीं, (२) प्रतिष्ठा बिना मनुष्य किसी काम का नहीं, और (३) पानी बिना चून निकम्मा है।

'पानी' शब्द के अनेक अर्थ होने से यहाँ श्लेष अलंकार हुआ।

(१२) दनुज होम न हो मन में डरो

(होमन—(१) होम + न (२) हो + मन)

(१३) तो पर वारौं उरवसी सुन राधिके सुजान
तू मोहन के उर बसी है उरवसी समान

(उरवसी—(१) उर्वशी अप्सरा, (२) उर में बसी, (३) मुक्तामाला)

(१४) बल वीरता प्रताप बड़ाई
नाक पिनाकहि संग सिधाई

(नाक—(१) नाक अर्थात् लज्जा (२) निरर्थक)

(१५) ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहनवारीं
ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहाती हैं
कंद मूल भोग करैं कंद मूल भोग करैं
तीन बेर खातीं ते वै तीन बेर खाती हैं
भूखन सिथिल अँग भूखन सिथिल अँग
बिजन डुलातीं ते वै बिजन डुलाती हैं
भूखन भनत वीर सिवराज तेरे त्रास
नगन जड़ातीं ते वै नगन जड़ाती हैं

(६) दिव्यांबरा वन अलौकिक कौमुदी से

अर्थ—परम निराली चाँदनी से दिव्यांबरवाली होकर।

यहाँ दिव्यांबरा शब्द के दो अर्थ हैं—

(१) दिव्य वस्त्रोंवाली

(२) दिव्य आकाशवाली।

विशेष उदाहरण

(१) वलिहारी नृप कूप की गुण विन बूँद न देहि

(१) नृप के पक्ष मे—गुण = सद्गुण। बूँद = कुछ भी।

(२) कूप के पक्ष मे—गुण = रस्सी। बूँद = जलविन्दु।

(२) द्विजतिय तारक पूतनामारण में अति धीर

काकोदर को दरपहर जय रघुवर यदुवीर

(१) राम के पक्ष में—द्विजतिय = अहल्या। पूतनामा = पवित्र नाम वाले। रण में = युद्ध मे। काकोदर = काकवेशी जयत।

(२) कृष्ण के पक्ष में—द्विजतिय = ब्राह्मणों की स्त्रियाँ जिनके साथ कृष्ण ने रासक्रीडा की थी। पृतना मारण मे = पृतना के मारने मे। काकोदर = साँप, अघासुर।

(३) मोहै मति सुमना, मना करौ वार ही वार

महा छली है मधुप यह, कहा करै इतबार

(१) फूल के पक्ष मे—सुमना = फूल। मधुप = भ्रमर।

(२) जहाँ गाँठि तहाँ रस नहीं यह जानत सब कोय

यहाँ गाँठि और रस दोनो शब्दों के दो दो अर्थ हैं—पहला (१) गाँठ, और मधुर द्रव और दूसरा (२) हृदय का अंतर, या कपट और प्रेम या आनन्द। दोनों अर्थ अपेक्षित हैं अतः यहाँ गाँठि और रस मे श्लेप है।

(३) कमला थिर न रहीम कह यह जानत सब कोय
पुरुप पुरातन की वधू क्यों न चंचला होय

यहाँ पुरातन पुरुप और चंचला इन शब्दों मे श्लेप है अर्थात् प्रत्येक के दो दो अर्थ हैं—पहला (१) वृद्ध पुरुप और स्वच्छंदचारिणी स्त्री और दूसरा (२) परमपुरुप विष्णु और अस्थिर।

(४) विपुल धन अनेकों रत्न हो साथ लाये
प्रियतम, बतला दो, लाल मेरा कहाँ है ?

यहाँ लाल के दो अर्थ हैं—(१) लाल मणि (२) प्यारा पुत्र।

(५) प्रतिपल उर में है लालसा तीव्र होती
उस परम निराले लाल के लाभ ही की

यहाँ भी लाल शब्द के दो अर्थ है—(१) लालमणि (२) प्रियपुत्र।

(६) दिव्यांबरा वन अलौकिक कौमुदी से

अर्थ—परम निराली चाँदनी से दिव्यांबरवाली होकर।

यहाँ दिव्यांबरा शब्द के दो अर्थ हैं—

(१) दिव्य वस्त्रोंवाली

(२) दिव्य आकाशवाली।

विशेष उदाहरण

(१) वलिहारी नृप कूप की गुण विन बूँद न देहि

(१) नृप के पक्ष में—गुण = सद्गुण। बूँद = कुछ भी।

(२) कूप के पक्ष में—गुण = रस्सी। बूँद = जलविन्दु।

(२) द्विजतिय तारक पूतनामारण में अति धीर
काकोदर को दरपहर जय रघुवर यदुवीर

(१) राम के पक्ष में—द्विजतिय = अहल्या। पूतनाना = पवित्र नाम वाले। रण में = युद्ध में। काकोदर = काकवेशी जयत।

(२) कृष्ण के पक्ष में—द्विजतिय = ब्राह्मणों की स्त्रियाँ जिनके साथ कृष्ण ने रासक्रीडा की थी। पूतना मारण में = पूतना के मारने में। काकोदर = साँप अघासुर

(३) मोहै मनि सुमना, मना करौं बार ही बार
महा छली है मधुप यह, करै करौं इनकार

(१) फूल के पक्ष में—सुमना = फूल मधुप = भ्रमर

वक्रोक्ति

जब किसी और अभिप्राय से कहे गये वक्ता के शब्दों का कोई और (वक्ता के अर्थ से भिन्न) अर्थ श्रोता-द्वारा लगाया जाय तो वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है।

वक्रोक्ति में—

(१) वक्ता किसी अभिप्राय से कुछ कहता है।

(२) श्रोता उसका दूसरा ऐसा अभिप्राय लगाता है जो वक्ता के अभिप्राय से भिन्न होता है।

(३) श्रोता वक्ता के अभिप्राय को समझता हुआ जानबूझ कर दूसरा अर्थ लगाता है।

वक्रोक्ति के दो भेद होते हैं—

(क) श्लेप-वक्रोक्ति

(ख) काकु-वक्रोक्ति

(क) श्लेष-वक्रोक्ति

इसमें—

(१) वक्ता किसी अभिप्राय से कुछ कहता है।

(२) श्रोता उसका दूसरा अर्थ लगाता है।

(३) यह अर्थ वक्ता के अभिप्राय से भिन्न होता है

(४) ऐसा दूसरा अर्थ श्लेष से लगाया जाता है।

(५) इस वक्रोक्ति में श्लेषवाले, यानी एक से अधिक अर्थ

देनेवाले, शब्दों का प्रयोग होता है (एक अर्थ वक्ता का और दूसरा श्रोता का)।

उदाहरण

(१) 'को तुम', 'हरि, प्यारी', 'न ह्याँ वानर को कछु काम'

अर्थ—कृष्ण आकर राधिका को द्वार खोलने के लिये कहते हैं। राधा पूछती हैं—बाहर तुम कौन हो ? कृष्ण उत्तर देते हैं—प्रिये, मैं हरि हूँ। राधा हरि का अर्थ वानर लेकर कहती हैं-यहाँ हरि अर्थात् वानर का कुछ काम नहीं।

यहाँ कृष्ण के हरि का अर्थ कृष्ण था। राधिका यह जानती हुई भी हरि का अर्थ बंदर लेती हैं और उपर्युक्त उत्तर देती हैं। हरि शब्द के दोनों अर्थ होते हैं। अतः यहाँ श्लेषवक्रोक्ति हुई।

(२) जो गोपाल तो जाहु लै गैयन को वन माँझ

अर्थ—कृष्ण फिर कहते हैं—मैं गोपाल हूँ। राधिका फिर गोपाल का दूसरा अर्थ ग्वाला लेकर उत्तर देती हैं—तो गायों को वन में ले जाओ, यहाँ क्यों आये ?

यहाँ गोपाल शब्द के दो अर्थ हुए। राधा ने जानबूझकर दूसरा अर्थ लिया। अतः यहाँ श्लेषवक्रोक्ति है।

(३) गौरवशालिनी प्यारी हमारी सदा तुमही इक इष्ट अहौ
हौं न गऊ नहीं हौ अवशा अलिनी हू नहीं अस काहे कहौ

अर्थ—महादेव जी पार्वती से कहते हैं—हे गौरवशालिनी

(महिमावाली) प्रिये, तुम्हीं सदा हमारी इष्ट हो। पार्वती गौरव-शालिनी शब्द का जानबूझ कर दूसरा अर्थ लेकर कहती हैं कि तुम मुझे गौरवशालिनी क्यों कहते हो क्योंकि न तो मैं गौ हूँ, न अवशा (स्वच्छंदचारिणी) हूँ, और न आलिनी (भ्रमरी) हूँ।

यहाँ गौरवशालिनी शब्द के दो अर्थ हैं—(१) महिमावाली (२) गाय + स्वच्छंद चारिणी + भ्रमरी (गौः + अवशा + आलिनी)। पार्वती ने दूसरा अर्थ लिया अतः यहाँ श्लेष-वक्रोक्ति है।

(ख) काकु-वक्रोक्ति

इसमें—

(१) वक्ता-द्वारा पहले कोई बात कही हुई होती है।

(२) श्रोता उसका अन्य अर्थ लेकर उत्तर देता है।

(३) यह अन्यार्थ काकु यानी कंठध्वनि से बोलकर सूचित किया जाता है।

उदाहरण

(१) राम साधु तुम साधु सुजाना
राम मातु भलि मैं पहिचाना
दसरथ ज्ञा न कैकय [illegible]
धर तजि [illegible]
सब कोइ कहत राम सुठि साधू

उसी का यह उत्तर कैकेयी देती है। वह साधु का अन्य अर्थ असाधु लेती है और उसे एक विशेष कण्ठध्वनि-द्वारा सूचित करती है।

(२) कह कपि, धर्मशीलता तोरी
हमहुँ सुनी कृत परतिय चोरी

रावण ने अंगद से कहा था—

खल तव कठिन वचन मैं सहऊँ
नीति धरम सब जानत अहऊँ

अंगद उसी का उपर्युक्त उत्तर देता है। यहाँ धर्मशीलता का अन्यार्थ अधर्मशीलता है।

(३) हम कुलघालक, सत्य तुम कुलपालक दससीस।

रावण ने अंगद को कहा था—

अंगद तुही बालि कर बालक
उपजेउ बंस अनल कुल घालक

उसी का यह उत्तर अंगद देता है। कुलपालक का अन्यार्थ काकु-द्वारा कुल का नाशक सूचित होता है।

विशेष उदाहरण

(१) धरमसीलता तव जग जागी
पावा दरस हमहुँ बड़भागी

(२) मैं सुकुमारि, नाथ वन जोगू
तुमहिं उचित तप, मो कहँ भोगू
(३) कह कपि, तव गुण गाहकताई
सत्य पवनसुत मोहि सुनाई

नोट—जहाँ वक्ता कोई वाक्य ऐसी कंठ-ध्वनि के साथ कहे कि श्रोता शब्दों के अर्थ से भिन्न अर्थ ग्रहण करे वहाँ भी काकु-वक्रोक्ति मानते हैं। यथा—

इस वसत ऋतु के आ जाने पर भी प्रीतम नहीं आवेगे! (अर्थात् अवश्य आवेगे)।

यह वाक्य ऐसी कठ-ध्वनि के साथ कहा गया है कि सुनने-वाला 'नहीं आवेगे' शब्दों का निषेधार्थक अर्थ न लेकर 'अवश्य आवेगे' यह अर्थ लेगा।

पुनरुक्तवदाभास

जहाँ एक ही वाक्य मे ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जाय जो देखने मे समान अर्थवाले हों पर वास्तव में उनका अर्थ भिन्न हो, वहाँ पुनरुक्तवदाभास अलंकार होता है।

उदाहरण

(१) पुनि फिरि राम निकट सो आई

यहाँ 'पुनि' का अर्थ फिर और 'फिरि' का अर्थ लौटकर है, पर देखने से दोनों का एक ही अर्थ 'फिर' जान पडता है। यहाँ पुनरुक्तवदाभास है अर्थात् पुनरुक्ति का आभास है, वास्तव में पुनरुक्ति नहीं है।

(२) अली भँवर गूँजन लगे, होन लगे दल पात
जहँ तहँ फूले रूख तरु, प्रिय प्रीतम कित जात

यहाँ—

१ अली का अर्थ सखी और भँवर का अर्थ भौंरा है पर देखने में दोनों का अर्थ भौंरा जान पडता है।

२ दल का अर्थ पत्ता और पात का अर्थ गिरना है पर देखने में दोनो का अर्थ पत्ता जान पडता है।

३. रूख का अर्थ रूखा और तरु का अर्थ पेड है पर देखने में दोनों का अर्थ पेड जान पडता है।

४ प्रिय का अर्थ प्यारा और प्रीतम का अर्थ पति है पर देखने में दोनों का अर्थ प्यारा (या पति) जान पड़ता है।

विशेष उदाहरण

(१) आई लेके स्व-प्रियपति को सद्म में नंद-वामा

प्रिय=(१) पति (२) प्यारा।

(२) वंदनीय केहि के नहीं ते कविंद मतिमान
सुरग गये हू काव्य जस जिनको जगत जहान

जगत=(१) संसार (२) जागृत है
जहान=संसार।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१. अनुप्रास किसे कहते हैं ?
२. अनुप्रास और लाटानुप्रास मे क्या भेद है ?
३. वर्णावृत्ति किस शब्दालंकार मे होती है ?
४. शब्दावृत्तिवाले अलंकार कौन कौन-से हैं ?
५. लाटानुप्रास और वीप्सा मे क्या अन्तर है ?
६. लाटानुप्रास और यमक मे अन्तर बतलाओ।
७. छेकानुप्रास और वृत्त्यनुप्रास मे क्या अन्तर है ? उदाहारण देकर समझाओ।
८ श्रुत्यनुप्रास का एक उदाहरण दो।
९. शब्दांश की आवृत्तिवाले यमक के दो उदाहरण दो।
१०. श्लेष किसे कहते हैं ?
११. श्लेष और यमक मे क्या अन्तर है ? उदाहरण देकर समझाओ।
१२. वक्रोक्ति मे क्या अभिप्राय है ? वक्रोक्ति अलंकार कहाँ होता है ?
१३ काकुवक्रोक्ति किसे कहते हैं ? काकु मे क्या अभिप्राय है ?
१४. पुनरुक्तवदाभास और श्लेष का अन्तर स्पष्ट करके समझाओ।

१५. पुनरुक्तवदाभास और पुनरुक्तिप्रकाश में कोई अंतर है या नहीं? यदि है तो क्या?

१६ श्लेष और श्लेष-वक्रोक्ति का अंतर स्पष्ट करो। प्रत्येक का एक-एक उदाहरण दो।

१७. शब्दालंकार को अर्थालंकार से भिन्न कैसे पहचानोगे? —

१८. निम्नलिखित अवस्थाओं में क्या अलंकार होंगे—

(क) एक शब्द बार बार आवे।

(ख) एक शब्द दो अर्थ देता हो।

(ग) एक ही वर्ण की पाँच आवृत्तियाँ हों।

(घ) दो वर्णों की तीन तीन आवृत्तियाँ हों।

(ङ) कोई शब्दांश एक से अधिक बार आया हो।

(च) कई शब्दों का एक से अधिक अर्थ ज्ञात पड़ता हो पर वास्तव में न हो।

(छ) एक ही स्थान से उच्चरित होनेवाले आठ वर्ण पास पास प्रयुक्त किये गये हों।

(ज) एक शब्द तीन बार उसी अर्थ में आवे पर अन्वय प्रत्येक बार भिन्न हो।

(झ वक्ता के अभिप्राय से भिन्न तात्पर्य ग्रहण किया जाय।

(ञ कंठध्वनि-द्वारा [illegible] से भिन्न अर्थ सूचित हो।

—

नोट—उपमा के वाचक शब्द ये हैं—

सा, जैसा, समान, सदृश, सरिस, सरीखा, सम, तुल्य, अनुहार, यथा, इव, ज्यों, जैसा, जिमि, इमि, यों, तथा वैसे, तैसे, तिमि, त्यों, जिस प्रकार, तरह, भाँति इत्यादि समानता सूचित करनेवाले शब्द।

उदाहरण

(१) मुख चंद्रमा के समान सुन्दर है।

यहाँ—

(१) मुख का वर्णन हो रहा है इसलिये मुख उपमेय है।

(२) मुख को चन्द्रमा के समान बताया गया है अतः चन्द्रमा उपमान है।

(३) समान शब्द से दोनों की समानता बताई गई है अतः यह वाचक शब्द है।

(४) सुन्दरता—यह गुण दोनों मे पाया जाता है अतः यह साधारण धर्म है।

यहाँ मुख और चन्द्रमा इन दो भिन्न वस्तुओं मे सुन्दरता यह एक साधारण धर्म बताया गया है अतः यहाँ उपमा अलकार है।

(२) मुख चन्द्रमा के समान चमकता है।

(१) मुख—उपमेय

(२) चन्द्रमा—उपमान

(३) समान—वाचन शब्द

(४) चमकना—साधारण धर्म।

यहाँ मुख और चन्द्रमा दो भिन्न वस्तुओं मे चमकना यह एक साधारण धर्म बताया गया है अतः यहाँ भी उपमा अलंकार है।

पहले उदाहरण मे साधारण धर्म गुणात्मक है और दूसरे में क्रियात्मक (सुन्दरता गुण है और चमकना क्रिया)।

उपमा के भेद

उपमा के दो भेद हैं—

(१) पूर्णोपमा, और (२) लुप्तोपमा।

उपमा में ऊपर बताई चारो चीजे आवश्यक होती हैं। कभी तो वे चारों शब्दों मे प्रकट होती हैं परंतु कभी-कभी उनमें से एक या दो या तीन का लोप कर दिया जाता है अर्थात् उनको शब्दों-द्वारा प्रकट नहीं किया जाता किंतु उनका अध्याहार कर लिया जाता है (अर्थात् समझ लिया जाता है)।

(१) जब चारों चीजें—उपमेय, उपमान साधारणधर्म और वाचक शब्द—शब्दो-द्वारा बतलाये जाते हैं तो वहाँ पूर्णोपमा होती है। यथा—

मुख	चन्द्रमा	के समान	सुन्दर है
१	२	३	४
उपमेय	उपमान	वाचक शब्द	साधारणधर्म

लुप्तोपमा

धर्म-लुप्ता

(१) भोग रोग सम, भूषन भारू
जम-जातना सरिस संसारू

यहाँ साधारण धर्म दुःखदायी का लोप कर दिया गया है। अर्थात् शब्द द्वारा उसका कथन नहीं किया पर उसका अध्याहार करना आवश्यक है।

(२) माँगन मरन समान है मत कोइ माँगो भीख

माँगन—उपमेय
मरन—उपमान
समान—वाचक शब्द

साधारण धर्म बुरा का लोप कर दिया गया है।

(३) करि प्रणाम रामहिं त्रिपुरारी
हरखि सुधा सम गिरा उचारी

गिरा—उपमेय
सुधा—उपमान
सम—वाचक शब्द

मधुर इस साधारण धर्म का लोप कर दिया गया है।

वाचक-लुप्ता

(१) नील सरोरुह-श्याम हरि, मो पै होहु दयाल

हरि—उपमेय

नील सरोरुह—उपमान

श्याम—साधारण धर्म

वाचक शब्द 'समान' का लोप होगया है।

वाचक-धर्म-लुप्ता

(१) सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना
भरि आये जल राजिव-नयना

नयन—उपमेय।

राजीव—उपमान।

वाचक शब्द 'समान' और साधारण धर्म 'सुन्दर' का लोप हो गया है।

विशेष उदाहरण

पूर्णोपमा

(१) भयावनी थी रवि-रश्मि हो गई
तवा समा थी तपती वसुधरा

(२) बडे बडे प्रस्तर-खंड वह्नि से
तुरंत होते तृणतुल्य दग्ध थे

(३) विदग्ध होके कण धूलराशि का
तपे हुए लोहकणों समान था
प्रतप्त वालू इव दग्ध भाड़ की
भयंकरी थी अति रेणु होगई

(४) विकट दर्शन कज्जल मेरु-सा,
गज-सुरेन्द्र समान पराक्रमी,
द्विरद क्या, जननी, उपयुक्त है
एक पयोमुख वालक के लिये ?

(५) लसित थी मुखमण्डल पै हँसी
विकच पंकज ऊपर ज्यों कला

(६) सीतल सिख दाहक भई कैसे
चकइहि सरद चाँदनी जैसे

(७) तन पसेउ, कदली जिमि काँपी
कुवरी दसन जीभ तव चाँपी

(८) तेहि पुर वसत भरत विनु रागा
चंचरीक जिमि चंपक-वागा

(९) हँसने लगे तव हरि अहा !
पूर्णेन्दु-सा मुख खिल गया

(१) राधा-मुख जलजात ज्यों कोमल सुरभित मंजु

मुख कमल के समान कोमल, सुरभित और सुन्दर है।

यहाँ पर—

(१) मुख उपमेय है,

(२) कमल उपमान है,

(३) समान वाचक शब्द है, और

(४) कोमल, सुरभित और मंजु ये तीन साधारण धर्म हैं।

एक से अधिक साधारण धर्म होने के कारण यहाँ समुच्चयोपमा हुई।

(२) बहु-तरंगमयी गुरु-नादिनी
जलधि-तुल्य रही रविजा बनी

यहाँ पर— (१) रविजा (यमुना) उपमेय,

(२) जलधि उपमान,

(३) तुल्य वाचक शब्द, और

(४) बहु-तरंगमयी और गुरु-नादिनी ये दो साधारण धर्म हैं।

(३) सत्पुरुषों के मनोभाव-सा
सरल, विमल, निरलस, कलरवमय।
अपनी ही गति में निमग्न है
धारागत उज्ज्वल फेनिल पय॥

मालोपमा

जब एक उपमेय को अनेक उपमानों से उपमा दी जाय।

उदाहरण

(१) मंजुल राधा-वदन वर कमल मयंक समान

मुख चन्द्रमा और कमल के समान सुन्दर है।

यहाँ पर—

(१) मुख उपमेय है,

(२) सुन्दर साधारण धर्म है

(३) समान वाचक शब्द है, और

(४) चन्द्रमा और कमल ये दो उपमान हैं।

एक से अधिक उपमान होने के कारण यहाँ मालोपमा हुई।

(२) मुख है मंजु मयंक सो, कोमल कमल समान

यहाँ पर—

(१) मुख उपमेय है,

(२) चन्द्रमा और कमल दो उपमान हैं,

(३) सो और समान वाचक शब्द हैं, और

(४) मंजु और कोमल दो साधारण धर्म हैं जिनमें से मंजु चन्द्रमा के साथ और कोमल कमल के साथ जाता है।

यहाँ भी एक से अधिक उपमान होने के कारण मालोपमा हुई।

नोट—प्रथम उदाहरण में उपमान अनेक हैं पर साधारण धर्म, एक है और दूसरे उदाहरण में उपमान अनेक हैं और साधारण धर्म भी अनेक हैं। समुच्चयोपमा में अनेक उपमान होते हैं और साधारण धर्म अनेक होते हैं पर वे सब एक ही उपमान में पाये जाते हैं, वहाँ उपमान एक ही होता है। मालोपमा में या तो सब उपमानों में एक ही धर्म पाया जाता है या प्रत्येक उपमान में एक एक धर्म।

मालोपमा के भेद

मालोपमा के दो भेद होते हैं—

(१) एकधर्मा—जब सब उपमानों में एक ही साधारण धर्म बताया जाय, जैसे प्रथम उदाहरण में।

(२) भिन्नधर्मा—जब प्रत्येक उपमान में अलग अलग साधारण धर्म बताया जाय, जैसे द्वितीय उदाहरण में।

उदाहरण

एकधर्मा—

(१) कुन्द-इन्दु सम देह, उमारमण करुणा-अयन

(२) इन्द्र जिमि जंभ पर वाड़व सुअंभ पर,
रावण सदंभ पर रघुकुल-राज हैं।

विशेष उदाहरण

(१) स्वामि, गुसाइँहिँ सरिस गुसाईं
मोहि समान मैं, स्वामि-दुहाई

(२) करम वचन मानस विमल,
तुम्ह समान तुम्ह तात।

(३) राम-से राम सिया-सी सिया
सिरमौर विरंचि विचारि सँवारे

(४) लही न कतहुँ हारि हिय मानी
इन्ह सम मे उपमा उर आनी

(५) उपमा न कोउ कह दास तुलसी
कतहुँ कवि-कोविद लहैं
बल-विनय-विद्या-सील-सोभा
सिंधु इन्ह सम येइ अहैं

(६) निरवधि गुन निरुपम पुरुष
भरत भरत-सम जानि।

रूपक

जब उपमेय पर उपमान का आरोप किया जाय अर्थात् उपमेय को उपमान बना दिया जाय।

नोट—साहश्य या साधर्म्य के कारण दोनों एक मान लिये जाते हैं।

उदाहरण

(१) मुख चन्द्रमा है।

यहाँ मुख पर चन्द्रमा का आरोप किया गया। अर्थात् मुख को चन्द्रमा बना दिया गया है।

(२) मुख दूसरा चन्द्रमा है।

यहाँ पर मुख को चन्द्रमा कहा तो है पर वही चन्द्रमा न कह कर दूसरा चन्द्रमा कहा है। यहां भी मुख को चन्द्रमा (दूसरा ही सही) बनाया गया अर्थात् मुख पर चन्द्रमा का आरोप किया गया।

(३) मुख-चन्द्र

यहाँ पर भी मुख को चन्द्रमा बनाया गया और दोनों को एक मान कर कोई अन्तर नहीं रखा गया है।

रूपक के भेद

रूपक के दो भेद होते हैं—

(१) अभेद रूपक (२) तद्रूप रूपक

अभेद रूपक

(१) अभेद रूपक में उपमेय उपमान को एक बना दिया जाता है, कोई भेद नहीं रखा जाता।

उदाहरण

मुख चन्द्रमा है

यहाँ पर मुख को चन्द्रमा बना दिया गया।

इसके तीन भेद होते हैं—

(१) सम अभेद रूपक—उपमेय और उपमान में परस्पर कोई अधिकता या न्यूनता (कमी-बेशी) नहीं बताई जाती।

(२) अधिक अभेद रूपक—उपमेय में उपमान की अपेक्षा कुछ अधिकता बताई जाती है।

(३) न्यून अभेद रूपक—उपमेय में उपमान की अपेक्षा कुछ न्यूनता या कमी बताई जाती है।

अभेद की भाँति इसके भी तीन भेद होते हैं।

(१) सम तद्रूप—जब उपमेय और उपमान में कोई कमी-बेशी न हो। यथा, मुख दूसरा चन्द्रमा है।

(२) अधिक तद्रूप—जब उपमेय में उपमान की अपेक्षा कुछ अधिकता बताई जाय। यथा, मुख दूसरा निष्कलंक चन्द्रमा है।

(३) न्यून तद्रूप—जब उपमेय में उपमान की अपेक्षा कुछ न्यूनता बताई जाय। यथा, मुख दूसरा चन्द्रमा है जो पृथ्वी पर ही चमकता है।

नोट—तद्रूप रूपक में दूसरा, अन्य, और, अपर आदि अन्यार्थवाचक शब्द आते हैं।

रूपक के अन्य भेद

रूपक के (मुख्यतया सम अभेद रूपक के) तीन भेद और होते हैं—

(१) सांग या सावयव—जब उपमेय में उपमान का आरोप हो और उपमेय के अंगों में उपमान के अंगों का आरोप भी साथ ही साथ हो।

(२) निरंग या निरवयव—जब केवल उपमेय में उपमान का आरोप हो और उपमेय के अंगों में उपमान के अंगों का आरोप न हो।

(३) परंपरित—जब प्रधान रूपक का कारण पहले किया हुआ एक दूसरा रूपक हो।

(१) सांग रूपक

उदाहरण

(१) ऊधो मेरा हृदय-तल था एक उद्यान न्यारा
शोभा देती अमित उसमें कल्पना क्यारियाँ थीं
प्यारे-प्यारे कुसुम कितने भाव के थे अनेकों
उत्साहों के विपुल विटपी मुग्धकारी महा थे
लोनी-लोनी नवल लतिका थीं अनेकों उमंगें
सद्वांछा के विहग उसमें मंजुभाषी बड़े थे
प्यारी आशा पवन जब थी डोलती स्निग्ध होके
तो होती थी अनुपम छटा बाग के पादपों की

यहाँ हृदय को बाग बनाया गया और बाग़ के समस्त अंगों का आरोप हृदय के अंगों पर किया गया। केवल बाग का ही नहीं, किन्तु बाग के समस्त अंगों का भी, वर्णन किया गया है।

हृदय—बाग। कल्पना—क्यारियाँ। भाव—कुसुम। उत्साह—पेड़। उमगे—लतायें। सदिच्छायें—पक्षी। आशा—पवन।

(२) विपति बीज बरिखा रितु चेरी
भुइँ भइ कुमति केकई केरी

पाइ कपट जल अंकुर जामा
वर दोउ दल, फल दुख परिणामा

यहाँ विपत्ति को वीज वनाया गया और तत्संवंधी वातों का वर्णन भी किया गया।

वीज—विपत्ति। वर्षाऋतु—मंथरा। भूमि—कैकेयी की दुर्वुद्धि। जल—कपट। पत्ते—दोनों वरदान। फल—दुःख।

(३) नारि कुमुदिनी, अवध सर, रघुवर-विरह दिनेस
अस्त भये विकसित भईं निरखि राम राकेस

यहाँ स्त्रियों को कुमुदिनी वनाया गया और तत्संवंधी वातों का वर्णन किया गया।

कुमुदिनी—नारियाँ। तालाव—अवधपुरी। सूर्य—राम का वियोग। चन्द्रमा—श्रीराम।

(४) मुद-मंगल-मय संतसमाजू, जो जग जंगम तीरथराजू।
राम-भगति जहँ सुरसरि-धारा, सरसइ ब्रह्म-विचार-प्रचारा।
विधि-निषेधमयकलिमल-हरणी, करम-कथा रविनंदिनि वरणी।
हरिहर-कथा विराजति वेनी, सुनत सकल मुद-मंगल-देनी।
वट विस्वासु अचल निज धर्मा, तीरथराज समाज-सुकर्मा—

यहाँ सन्त-समाज को तीर्थराज प्रयाग बनाया गया और प्रयाग के अंगों का वर्णन किया गया।

सन्तसमाज—प्रयाग। रामभक्ति—गंगा। ब्रह्मविचार—सरस्वती। कर्मकथा—यमुना। हरिहरकथा—त्रिवेणी। विश्वास—प्रयाग का प्रसिद्ध अक्षयवट। सत्कर्म करनेवाले लोग—यात्री-समाज।

(५) आश्रम सागर, सान्तरस, पूरन पावन पाथ
सेन मनहुँ करुना सरित, लिये जाहिं रघुनाथ।
बोरति ज्ञान-विराग करारे, वचन ससोक मिलत नद-नारे।
सोच-उसास समीर-तरंगा, धीरज तट-तरुवर कर भंगा।
विषम विषाद तोरावति धारा, भय-भ्रम भँवर-अवर्त्त अपारा।
केवट बुध, विद्या बड़ि नावा, सकइ न खेइ एक नहिं आवा।
वनचर कोल किरात विचारे, थके विलोकि पथिक हिय हारे।
आश्रम उदधि मिली जब जाई, मनहु उठेउ अंबुधि अकुलाई।

यहाँ आश्रम को समुद्र बनाया और भरतसेना को नदी। उनके अंगो का भी वर्णन किया गया है—

सेना—नदी। शांतरस—पानी। ज्ञान वैराग्य—दोनों किनारे। शोकपूर्ण वचन—नद और नाले जो नदी मे मिलते हैं। चिन्ता भय उसाँस—हवा और लहरें। धैर्य—नदी-किना-

का पेड़। विपाद—तेज धारा। भयभ्रम—भँवर। बुद्धिमान्—केवट। विद्या—नाव। पथिक (यात्री)—कोल किरात आदि वनचर। आश्रम—समुद्र।

(६) प्रात प्रातकृत करि रघुराई, तीरथराज देखि प्रभु जाई।
सचिव सत्य, स्रद्धा प्रियनारी, माधव सरिस मीत हितकारी।
चारि पदारथ भरा भँडारू, पुण्य-प्रदेस देस अति चारु।
छेत्र अगम गढ़ गाढ़ सुहावा, सपनेहुँ नहि प्रतिपच्छिन्ह पावा।
सेन सकल तीरथ वर वीरा, कलुष अनीक-दलन रनधीरा।
संगम सिंहासन सुठि सोहा, छत्र अछयवट मुनि मन मोहा।
चँवर जमुन अरु गंग तरंगा, देखि होहिं दुख दारिद भंगा।
सेवहिं सुकृती साधु सुचि, पावहिं सब मन-काम।
वंदी वेद-पुरान-गन, कहहिं विमल गुन-ग्राम।

यहाँ तीर्थराज प्रयाग को राजा बनाया गया और राजा के अंगों का आरोप भी प्रयाग के अंगों पर किया गया। यथा—

तीर्थराज प्रयाग—राजा। श्रद्धा—रानी। सत्य—मंत्री। मित्र—भगवान्। चार पदार्थ—कोपभंडार। पुण्यभूमि—देश या राज्य। क्षेत्र—गढ। सबतीर्थ—सेना के योद्धा। कलुष अनीक—शत्रुसेना। गंगा यमुना सरस्वती का संगम—सिंहासन। अक्षयवट—राज्यच्छत्र। यमुना गंगा की तरंगे—चमर। साधुसमाज—सेवक या राजसभा। वेदपुरान—वंदी (यशगायक)।

नोट—रामचरितमानस मे मानस के साथ रामचरित्र का बड़ा ही मनोहर रूपक बाँधा गया है। देखो बालकाण्ड दोहा ३५ से ४३ तक।

(२) निरंग रूपक

उदाहरण

(१) अति आनन्द उमगि अनुरागा
चरन सरोज पखारन लागा

यहाँ चरण पर सरोज का आरोप किया गया अर्थात् चरणों को सरोज बनाया गया पर सरोज के अंगों का आरोप किसी पर नहीं किया गया।

(२) जद्यपि नीतिनिपुन नरनाहू
नारि-चरित जलनिधि अवगाहू

यहाँ नारि-चरित को समुद्र बनाया गया पर समुद्र के अंगो का वर्णन नहीं किया।

(३) सुअन का वदनाबुज देखके
पलकने कितने जन हैं मदा

यहा वदन को अबुज बनाया गया है

(४) अभिमन्युरूपी रत्न सहसा जो हमारा खो गया

यहाँ अभिमन्यु को रत्न वनाया गया है।

(५) करुनानिधि मन दीख विचारी
उर अंकुरेउ गर्व तरु भारी

यहाँ गर्व को तरु वनाया गया है।

(६) भक्ति-नदी में क्यों न नहाकर कर लेता है जीवन शीतल

यहाँ भक्ति को नदी वनाया है।

(२) परंपरित रूपक

जव प्रधान रूपक का कारण एक अन्य रूपक हो।

परंपरित रूपक मे दो रूपक होते हैं एक प्रधान, दूसरा अप्रधान। प्रधान रूपक का कारण अप्रधान रूपक होता है अर्थात् यदि अप्रधान रूपक न किया जाय तो प्रधान रूपक भी नहीं होगा।

उदाहरण

(१) तुम्ह विन रघुकुल-कुमुद-विधु सुरपुर नरक समान।

यहाँ दो रूपक हैं:—

(१) राम (तुम्ह) रूपी चंद्रमा (प्रधान रूपक)
(२) रघुकुलरूपी कुमुद (अप्रधान रूपक)

यहां पर राम को चन्द्रमा इसलिये बनाया गया कि पहले रघुकुल को कुमुद बना चुके थे। इस प्रकार प्रधान रूपक का कारण अप्रधान रूपक है।

(२) तेहि अवसर सुनि सिव-धनु-भंगा
आये भृगु-कुल-कमल-पतंगा

यहाँ पर दो रूपक हैं :—
(१) परशुरामरूपी पतंग (सूर्य) (प्रधान)
(२) भृगुकुलरूपी कमल (अप्रधान)

यहाँ परशुराम को पतग इसलिये बनाया कि पहले भृगुकुल को कमल बना चुके थे।

(३) राम-कथा सुन्दर करतारी
संसय विहग उड़ावनहारी

यहाँ पर दो रूपक हैं :—
(१) रामकथारूपी सुन्दर करतारी (ताली)—प्रधान
(२) संशयरूपी विहग (पक्षी)—अप्रधान

रामकथा को करतारी इसलिये बनाया कि सशय को विहग बनाया गया था। रामकथा को करतारी बनाने का कारण संशय को विहग बनाना है। प्रधान रूपक का कारण अप्रधान रूपक होने से यहां परपरित रूपक हुआ।

(४) वन्दउँ पवनकुमार खलवन-पावक-ज्ञानघन

ऊपर उदाहरण (१) से (४) वस्तूत्प्रेक्षा के उदाहरण हैं, उदाहरण (५) हेतूत्प्रेक्षा का तथा उदाहरण (६) फलोत्प्रेक्षा का उदाहरण है। विशेष उदाहरण आगे दिये जाते हैं—

वस्तूत्प्रेक्षा

(१) सोहत ओढ़े पीतपट स्याम सलोने गात
मनो नीलमणि सैल पर आतप पर्यो प्रभात

यहाँ (१) श्यामवर्ण कृष्ण में नीलमणि के शैल की और (२) पीताम्बर में प्रभातकालीन सूर्य की धूप की संभावना की गई है।

(२) कहती हुई यों उत्तरा के नेत्र जल से भर गये
हिम के कणों से पूर्ण मानो हो गये पंकज नये

यहाँ अश्रुपूर्ण नेत्रों में ओसकण-पूरित पंकजों की संभावना की गई है।

(३) कहते हुए यों पार्थ के दो बूँद आँसू गिर पड़े
मानो हुए दो सीपियों से व्यक्त दो मोती बड़े

यहाँ आँखों में सीपियों की और आँसू की बूँदों में मोतियों की संभावना की गई है।

(४) विकच-वारिज-पुंज विलोक के
उपजती उर में यह कल्पना

वहु प्रफुल्लित लोचन चारु से
वन-छटा लखते सर-वृन्द हैं

यहाँ खिले हुए कमलों में प्रफुल्लित लोचनों की संभावना की गई है।

(५) गृह गली मग मंदिर चौरहों
तरुवरों पर थी लसती ध्वजा
समुद सूचित थी करती मनो
वह समस्त कथा सुरलोक की

यहाँ वास्तव में ध्वजा सुरलोक को कोई कथा नहीं सूचित करती पर सभावना की गई है कि वह सूचित करती है। यहाँ अकार्य कार्य की संभावना की गई है।

(६) अति कटु वचन कहति कैकेई
मानहुँ लोन जरे पर देई

कैकेयी के कटु वचन-कथन मे जले पर नमक देने की सभावना की गई है।

(७) अधिक सनेह देह भइ भोरी
सरद-ससिहि जनु चितव चकोरी

यहाँ राम और सीता में शशी और चकोरी की सभावना की गई है।

हेतूत्प्रेक्षा

(१) सभीत हो दाव निदाघ से मनो
नहीं गिरा भी तजती स्वसद्म थी

वाणी मुख से बाहर नहीं निकलती थी। इसका यह हेतु बताया गया है कि वह निदाघ के दाव से सभीत हो रही थी। पर वास्तव में यह हेतु नहीं है अतः यहाँ अहेतु में हेतु की कल्पना की गई है।"

(२) पाई अपूर्व थिरता मृदु वायु ने थी
मानो अचंचल विमोहित हो बनी थी

वायु अचञ्चल बन गई थी। इसका हेतु यह बताया गया है कि वह मुग्ध हो गई थी। पर जड़ होने के कारण पवन का मुग्ध होना संभव नहीं अतः यह हेतु नहीं है।

(३) मनो कठिन आँगन चले ताते राते पायँ

श्री कृष्ण के पैर लाल हैं। लाल होने का हेतु यहाँ पर यह बताया गया है कि वे कठिन आँगन पर चले थे। पर यह हेतु नहीं है उनके पैर तो स्वभावत लाल थे। इस प्रकार यहाँ अहेतु को हेतु माना गया।

(४) भुज भुजंग, सरोज नैननि, बदन विधु, जित्यो लरनि
रहे विवरन, सलिल, नभ, उपमा अपर दुरी डरनि

श्री कृष्ण की भुजाओं ने साँपों को, नेत्रों ने कमलों को और मुख ने चन्द्र को लड़ाई मे जीत लिया इसलिये वे क्रमशः विवर, पानी और आकाश में जा रहे। अन्य उपमायें भी डर कर छिप गईं।

साँपों के विवरों में, कमलों के पानी में और चन्द्रमा के आकाश मे रहने का कारण यह नहीं है कि वे लड़ाई मे जीते जाने से लज्जित हुए थे। परन्तु यहाँ यह कारण बतलाया है। अतः अहेतु को हेतु माना गया।

(५) महरि का यह कष्ट विलोक के
धुन रहा सिर गेह-प्रदीप था

घर का दीपक सर धुन रहा था पर यशोदा का कष्ट देख करके नहीं। पर यहाँ कहा गया कि कष्ट देख करके ही वह सिर धुन रहा था। इस प्रकार जो हेतु नहीं है उसको यहाँ हेतु माना गया है।

(६) इनहिं देखि विधि मनु अनुरागा
पटतर-जोग बनावन लागा
कीन्ह बहुत स्रम एक न आये
तेहि इरखा बन आनि दुराये

ब्रह्मा जी जब राम लक्ष्मण जैसे अन्य व्यक्ति न बना सके तो इर्ष्या के कारण राम लक्ष्मण को वन मे भेज दिया। ब्रह्मा का ईर्ष्या उनके वनगमन का कारण नहीं है पर उसे कारण माना गया है। अत यहाँ हेतूत्प्रेक्षा हुई।

नोट—अंतिम तीन उदाहरणों मे वाचक शब्द माना का लोप हो गया है।

फलोत्प्रेक्षा

(१) रोज नहात है छीरधि में ससि तो मुख की समता लहिबे को

चन्द्रमा सदा समुद्र मे गोते लगाता है (अस्त होने के समय)। उसका गोता लगाने का उद्देश्य यह बताया गया है कि वह मुख की बराबरी करना चाहता है। पर यह उद्देश्य चन्द्रमा के गोता लगाने का नही है। उसके कार्य (गोता लगाने का) यह फल (मुख की बराबरी कर सकता) नहीं है पर उसे फल माना है अतः यहाँ अफल में फल की कल्पना की गई।

(२) तव पद समता को कमल जल सेवत इक पाँय

कमल जल मे डंडी पर खड़ा रहता है पर उसका उद्देश्य चरणों की समानता करने का नहीं होता। यहाँ उसका यह उद्देश्य बताया गया है अतः अफल को फल माना गया है।

(३) बढ़त ताड़ को वृक्ष यह मनु चूमन आकाश

ताड का वृक्ष बढ़ता है पर आकाश को चूमने के उद्देश्य से नहीं। फिर भी उसके (बढने रूप) कार्य का यही फल बताया है इस प्रकार अफल को फल माना गया है।

हेतूत्प्रेक्षा और फलोत्प्रेक्षा में अंतर—

यह प्रश्न करो कि क्रिया किस लिये—किस उद्देश्य से—किस फल की इच्छा से—की गई। यदि उत्तर मिले तो फलोत्प्रेक्षा है नही तो हेतूत्प्रेक्षा।

भ्रांतिमान्

जब उपमेय को भ्रम से उपमान समझ लिया जाय अर्थात् उपमेय में उपमान का धोखा हो।

नोट—जब किसी वस्तु को और कुछ समझ लिया जाय तो उसे भ्रांति कहते हैं। यह भ्रांति दो वस्तुओं (उपमेय और उपमान) के सादृश्य के कारण होती है। जैसे मुख को देखकर कोई कहे।

(१) यह चन्द्रमा है

वास्तव मे तो वह वस्तु चन्द्रमा नहीं मुख है, परन्तु देखने-वाला उसे चन्द्रमा ही समझता है। सादृश्य के कारण वह भ्रम मे पड गया है।

(२) कपि करि हृदय विचार दीन्ह मुद्रिका डारि तब
जनु अशोक अंगार दीन्ह हरखि उठि कर गहेउ

हनुमान् जी ने मुद्रिका डाली पर सीता ने उसे अशोक का अंगारा समझ लिया।

(३) जो जेहि मन भावै सो लेहीं
मणि मुख मेलि डारि कपि देहीं

वानर मणियो को फल समझ कर लेते और मुँह मे डालते हैं पर जब कड़ी लगती हैं तो उगल देते हैं। मणियों को फल समझना भ्रांति हुई।

(४) पेशी समझ माणिक्य को वह विहग देखो ले चला

यहाँ पक्षी को माणिक्य मे पेशी का भ्रम हुआ।

सन्देह

नोट—किसी एक वस्तु में अनेक वस्तुओं का ज्ञान होना और निश्चय न होना सन्देह कहलाता है। हम किसी वस्तु को देखते हैं पर हमें ठीक निश्चय नहीं होता कि यह वस्तु वही है या कोई दूसरी। हमें यह ज्ञान होता है कि जो वस्तु हम देख रहे हैं उसमे कई वस्तुओं के गुण पाये जाते हैं, सबके होने की संभावना है और हम निश्चय रूप से नहीं कह सकते कि यह वस्तु यह है और यह नहीं है।

जहाँ किसी वस्तु के देखने पर उसका निश्चयात्मक ज्ञान न हो और उसमे अनेक वस्तुओं के होने की संभावना मालूम हो अर्थात् कई वस्तुओं का सन्देह हो वहाँ सन्देह अलंकार होता है।

सन्देह मे—

(१) हम कोई हैं वस्तु देखते।

(२) उसमे कई वस्तुओं के गुण पाये जाते हैं।

(३) उसमे कई वस्तुओं के होने की सभावना भासित होती है।

(४) हम ठीक ठीक निश्चय नहीं कर सकते कि वह उन वस्तुओ मे से कौन-सी वस्तु है।

उदाहरण

(१) यह मुख है या चन्द्रमा

देखनेवाला मुख को देखता है पर उसे निश्चयात्मक ज्ञान नही होता कि वह मुख है या चन्द्रमा है। है तो दोनों मे से एक पर कौन-सा है यह वह नहीं बतला सकता अर्थात् उसे सन्देह हो रहा है। अतः यहाँ सन्देह अलंकार हुआ।

(२) की तुम्ह तीनि देव महँ कोऊ
नर नारायण की तुम दोऊ

तीन देवों मे से दो देवता हैं या नर नारायण हैं यह सन्देह राम लक्ष्मण को देखकर हनुमान् जी को होता है।

(३) कहहि सप्रेम एक एक पाहीं
राम-लषन, सखि, होइ कि नाहीं
वय वपु वरन रूप सोइ, आली
सील-सनेह सरिस, सम चाली
वेख न सो, सखि, सीय न संगा
आगे अनी चली चतुरंगा
नहिं प्रसन्न मुख, मानस खेदा
सखि, संदेह होत यहि भेदा

ग्राम वासिनी स्त्रियों को भरत शत्रुघ्न को देखने पर राम लक्ष्मण का सन्देह हो गया है।

नोट—कभी कभी पहले सन्देह होता है और फिर निर्धारण से दूर हो जाता है। यहां भी सन्देह अलंकार होता है—

(४) घनच्युत चपला ? कै लता ? संशय भयो निहारि
दीरघ स्वासनि लखि कपी किय सीता निरधारि

सीता को देखकर हनूमान् को बिजली और लता का सन्देह हुआ पर दीर्घ श्वास के कारण उनका सन्देह मिट गया।

दृष्टान्त

जहाँ पहले एक बात कह कर उसको स्पष्ट करने के लिये उससे मिलती जुलती दूसरी बात कही जाय।

दृष्टान्त में—(१) दो वाक्य होते हैं।

(२) प्रथम वाक्य में कोई बात कही जाती है।

(३) द्वितीय वाक्य में उससे मिलती-जुलती कोई बात कही जाती है।

(४) यह बात पहली बात के उदाहरण के रूप में होती है।

(५) दोनों बातों मे समानता होती है पर दोनों का कोई एक साधारण धर्म नहीं होता (अर्थात् दोनों के धर्म पृथक् पृथक् होते हैं) एव एक धर्म न होने पर भी समानता होती है।

उदाहरण

(१) भरतहि होइ न राजमद विधि-हरि-हर-पद पाइ
कबहुँ कि कॉजी-सीकरनि छीरसिंधु बिनसाइ

यहाँ प्रथम वाक्य में भरत के विषय में एक बात कही गई दूसरे वाक्य मे वैसी ही बात छीरसिंधु की कही गई। भरत और

चीरसिंधु में समानता है। दोनों वाक्य मिलते-जुलते-से हैं—(१) भरत को महान् पद पाकर भी राजमद नहीं होगा। (२) छीरसिंधु काँजी के छींटों से नहीं फटता।

पर दोनों का साधारण धर्म एक नहीं है। पहले वाक्य का धर्म है राजमद नहीं होना और दूसरे का फटना।

(२) जपत एक हरिनाम के पातक कोटि विलाय
लघु चिनगारी एक ते घास ढेर जरि जाय

पहले एक बात कही गई कि एक हरिनाम के जाप से करोड़ों पातक विला जाते हैं फिर उसका उदाहरण देते हुए वैसी ही एक दूसरी बात कही गई कि एक छोटी-सी चिनगारी से घास का ढेर जल जाता है।

विशेष उदाहरण

(१) शिव औरंगहि जिति सकै और न राजा राव
हत्थिमत्थ पर सिंह बिनु आन न घालै घाव

(२) मूढ़ तहाँ ही मानिये जहाँ न पंडित होय
दीपक को रवि के उदै बात न पूछै कोय

(३) कन कन जोरै मन जुरै खाते निवरै सोय
बूँद बूँद सों घट भरै टपकत रीतो होय

व्याजस्तुति

जब निन्दा के बहाने स्तुति की जाय या स्तुति के बहाने निन्दा की जाय अर्थात् या तो (१) शब्दों मे निन्दा जान पड़े पर वास्तव मे स्तुति हो, या (२) शब्दों मे स्तुति जान पड़े पर वास्तव में निन्दा हो।

व्याजस्तुति के भेद

व्याजस्तुति के दो भेद होते हैं—

(१) व्याजस्तुति—जब निन्दा के बहाने स्तुति की जाय अर्थात् जब जान तो यह पड़े कि निन्दा की जा रही है पर वास्तव मे स्तुति हो।

(२) व्याजनिन्दा—जब स्तुति के बहाने निन्दा की जाय अर्थात् जब जान तो यह पड़े कि स्तुति की जा रही है पर वास्तव मे निन्दा हो।

(१) व्याजस्तुति के उदाहरण

(१) जोग जप जागैं छाँड़ि जाहु न परागैं भैया
मेरी कही आँखिन के आगे सुतै आवैगी

कहै पदमाकर न ऐहै काम सरसुती
साँच हूँ कलिंदी कान करन ना पावैगी
लेहै छीन अंबर, कै दिगंबर जोरावरी,
बैल पै चढ़ाय सु तौ सैल पै चढ़ावैगी
मुंडन केमाल की भुजंगन के जाल की सु
गंगा गज-खाल की खिलत पहिरावैगी

गंगा में स्नान करने से वह अंबर छीन करके दिगंबर बना देगी, बैल पै चढाकर शैल पर बिठा देगी और मुंडमाल, भुजंग व गजखाल पहना देगी। देखने पर तो गंगा की यह निंदा जान पडती है पर वास्तव में स्तुति है कि गंगा स्नान करनेवाले मनुष्य को महादेव बना देती है।

(२) कासीपुरी की कुरीति बुरी जहँ देह दिये पुनि देह न पावत

काशी को देह देने से, अर्थात् वहाँ मरने से, देह भी नहीं मिलती। यह काशी के लिये बुरी बात है।

यहाँ काशी की देखने से निन्दा मालूम होती है पर वास्तव में स्तुति है कि काशी धन्य है जहाँ मरने से फिर देहधारण नहीं करना पडता।

(३) जमुना तुम अविवेकिनी, कहा लियाँ यह ढंग
पापिन सों निज बंधु को मान करावति भंग

यमुना पापियों को तार करके अपने भाई यमराज का मानभंग करवाती है इसलिये वह अविवेकिनी है। देखने में यह निन्दा मालूम होती है पर वास्तव में स्तुति है कि यमुना पापियों को भी तार देती है इसलिये महिमा-वाली है।

(४) मन क्रम वचनों से अर्चना जो तुम्हारी
निशि दिन करते हैं, श्याम, तू हा! उन्हीं की
जनम-जनम की है देह को छीन लेता,
अयि नटवर, तेरे ढंग ये हैं न अच्छे

(२) व्याजनिन्दा के उदाहरण

(१) राम साधु, तुम साधु सुजाना
राम मातु भलि, मैं पहिचाना

कैकेयी दशरथ से कहती है। देखने में स्तुति मालूम होती है पर वास्तव में निन्दा है कि तुम सब दुष्ट हो।

(२) सेमर तू बड़-भाग है कहा सराहौं जाइ
पंछी करि फलआस तोहि निस दिन सेवत आइ

यहाँ वड़ भागी कहकर सेमर की स्तुति की गई है पर वास्तव मे निन्दा है कि पत्ती फल की आशा से आते हैं पर वंचित होते हैं इस प्रकार वह महाछली है।

(३) है निष्काम न दूसरो तव समान जग माँहि
हरि गुण मुक्ता-माल को कंठ करै कभु नाँहि

उल्लेख

जब एक वस्तु का अनेक प्रकार से वर्णन किया जाय।

उदाहरण

(१) साधुन को सुखदानि है दुर्जन-गन दुख-दानि
वैरिन विक्रम-हानि-प्रद राम, तिहारे पानि

हे राम, तुम्हारे हाथ सज्जनों को सुख प्रदान करते हैं, दुर्जनों को दुःख प्रदान करते हैं और शत्रुओं को शौर्य-हानि प्रदान करते हैं (शौर्य नष्ट कर देते हैं)

यहाँ पर राम के हाथों का तीन प्रकार से वर्णन किया गया।

(२) विदुषन प्रभु विराट-मय दीसा
बहु मुख कर पग लोचन सीसा
हर भगतनि देखेउ दोउ भ्राता
इष्टदेव इव सब सुखदाता
देखहिं भूप महा रनधीरा
मनहुँ वीर रस धरे शरीरा
सहित विदेह विलोकहि रानी
सिसु सम प्रीति न जाइ बखानी

यहाँ एक ही राम का पाँच प्रकार से वर्णन किया गया।

उल्लेख के भेद

उल्लेख के दो भेद होते हैं—

(१) प्रथम उल्लेख, (२) द्वितीय उल्लेख।

प्रथम उल्लेख

जब एक व्यक्ति या वस्तु को अनेक व्यक्ति अनेक प्रकार से देखें, सुनें, समझें या वर्णन करें।

उदाहरण

(१) जिन्हकें रही भावना जैसी
प्रभु-मूरति देखी तिन्ह तैसी
देखहिं भूप महारन धीरा
मनहुँ वीर रस धरे सरीरा
डरे कुटिल नृप प्रभुहि निहारी
मनहुँ भयानक मूरति भारी
रहे असुर छल-छोनिप-बेखा
तिन प्रभु प्रगट काल सम देखा
पुरवासिन्ह देखे दोउ भाई
नर-भूषन लोचन सुखदाई

सहित विदेह विलोकहिं रानी
सिसु सम प्रीति न जाइ बखानी
जोगिन्ह परम-तत्त्व-मय भासा
सांत सुद्ध सम सहज प्रकासा
रामहि चितव भाव जेहि सीया
सो सनेह सुख नहिं कथनीया
जेहि विध रहा जाहि जस भाऊ
तेहि तस देखेउ कोसल-राऊ

यहाँ एक व्यक्ति श्री राम को अनेक व्यक्तियों ने अनेक प्रकार से देखा।

द्वितीय उल्लेख

जब एक व्यक्ति या वस्तु को एक ही व्यक्ति अनेक प्रकार से वर्णन करे।

उदाहरण

(१) स्वकुल जलज का है जो समुत्फुल्लकारी
मम परम-निराशा-यामिनी का विनाशी
व्रज-जन-विहगों के वृन्द का मोद-दाता
वह दिनकर-शोभी राम-भ्राता कहाँ है ?

यहाँ यशोदा श्री कृष्ण का अनेक प्रकार से वर्णन करती हैं।

(२) हरीतिमा का सुविशाल सिंधु-सा
मनोज्ञता की रमणीय भूमि-सा
विचित्रता का शुभ सिद्धपीठ-सा
प्रशांत वृन्दावन दर्शनीय था

यहाँ कवि वृन्दावन का अनेक प्रकार से वर्णन करता है।

(३) यों थे कलाकर दिखा कहते विहारी
है स्वर्ण-मेरु यह मेदिनि-माधुरी का
है कल्प-पादप अनूपमताऽटवी का
आनन्द-अंबुधि-विचित्र-महामणी है
है ज्योति-आकर, पयोधर है सुधा का
शोभा-निकेत प्रिय वल्लभ है निशा का
है भाल का प्रकृति के अभिराम भूषा
सर्वस्व है परम रूपवती कला का

यहा विहारी (श्री कृष्ण) ने चन्द्रमा का अनेक प्रकार से वर्णन किया है।

(४) तू रूप है किरन में, सौन्दर्य है सुमन में
तू प्राण है पवन में, विस्तार है गगन में

तू ज्ञान हिंदुओं में, ईमान मुसलिमों में
तू प्रेम क्रिश्चियन में, है सत्य तू सुजन में

यहाँ कवि परमात्मा का अनेक प्रकार से वर्णन करता है।

(५) यह मेरी गोदी की सोभा
सुख-सुहाग की है लाली
शाही शान भिखारिन की
है मनोकामना मतवाली
दीप-शिखा है अंधकार को
घनी घटा की उजियाली
ऊषा है यह कमल-भृङ्ग की
है पतझड़ की हरियाली

यहाँ कोई माता अपनी वालिका का अनेक प्रकार से वर्णन करती है।

(६) नील व्योम के सुंदर दीपक,
शीतलता के भव्य भवन
उस निर्जन वन में अनंत की
नीरवता मे खिले सुमन
आकुलता के सौम्य कलेवर,
मथित क्षीर-सागर-नवनीत
निशा-सुंदरी के भावुक पति,
मेरे मानस के संगीत

यहां कवि चन्द्रमा का अनेक प्रकार से वर्णन करता है।

अपह्नुति

जब एक बात का निषेध करके दूसरी बात स्थापित की जाय।

नोट—(१) स्थापित करने से अभिप्राय है होना कथन करना।

(२) अपह्नुति मे साधारणतया सच्ची बात को छिपा कर झूठी बात की स्थापना की जाती है अर्थात् उपमेय का निषेध करके उपमान का होना कहा जाता है। केवल भ्रान्तापह्नुति में झूठी बात का निषेध करके सच्ची बात कही जाती है।

उदाहरण

(१) यह मुख नही है चन्द्रमा है

मुख को देखकर कोई जान-बूझ कर कहता है कि यह मुख नहीं है चन्द्रमा है। यहाँ उपमेय का निषेध करके उपमान का होना कहा गया।

नोट—यहाँ कहनेवाला मुख को चन्द्रमा नहीं समझ रहा है, वह मुख को मुख ही जानता है, पर जान-बूझ कर मुख का होना निषेध करता है। यदि वास्तव में वह मुख को चन्द्रमा समझ ले और फिर कहे कि, यह मुख नहीं चन्द्रमा है, तो उस अवस्था मे अपह्नुति न होकर भ्रान्तिमान अलंकार हो जायगा।

अपह्नुति के ६ भेद होते हैं—

(१) शुद्धापह्नुति—सत्य बात या उपमेय का निषेध करके असत्य बात या उपमान की स्थापना की जाय।

(२) हेत्वपह्नुति—सत्य बात या उपमेय का निषेध करके असत्य बात या उपमान की स्थापना की जाय और ऐसा करने का हेतु भी साथ ही साथ बताया जाय।

(३) पर्यस्तापह्नुति—उपमान के धर्म का उपमान में होना निषेध करके उपमेय में उस धर्म का होना कहा जाय।

(४) छेकापह्नुति—सत्य बात को कुछ प्रकट करके फिर चतुराई से उसका निषेध कर दिया जाय और असत्य बात बना दी जाय।

(५) कैतवापह्नुति—बहाने, मिस, छल, व्याज इत्यादि व्याजार्थक शब्दों से सत्य वस्तु का निषेध करके असत्य वस्तु की स्थापना की जाय।

(६) भ्रान्तापह्नुति—असत्य बात का निषेध करके सत्य बात बतलाई जाय और इस प्रकार किसी की भ्रांति को दूर करने का प्रयत्न किया जाय।

(१) शुद्धापह्नुति

सत्य बात का निषेध करके असत्य बात की स्थापना की जाय अर्थात् उपमेय का निषेध करके उपमान की स्थापना की जाय।

उदाहरण

(१) नाहीं राधा-बदन यह, यह तो उदित मयंक

राधा बदन को देखकर कहा जाता है कि यह तो मयंक है। यहाँ राधा-बदन सत्य बात है जिसका निषेध किया गया है और मयंक असत्य बात है जिसका होना कहा गया है।

(२) पहिरे स्याम न पीतपट, घन में बिज्जु-बिलास

पीतांबर पहने श्याम को देखकर कहा जाता है कि बिजली-मय मेघ है। यहाँ—

पीतांबर-युक्त श्याम—सत्य बात है उसका निषेध किया गया।
बिजली-युक्त मेघ—असत्य बात है उसका होना कहा गया।

(३) मै जु कहा रघुबीर कृपाला
बंधु न होय मोर यह काला।

बालि के लिये सुग्रीव कहता है कि यह मेरा बंधु नहीं, काल है। बन्धु सत्य बात है उसका निषेध किया गया और काल असत्य बात है उसका होना कहा गया।

(४) अहह ! अहह ! देखो, टूटता है न तारा
पतन दिल-जले के गात का हो रहा है

तारा टूटना सत्य बात है उसका निषेध किया गया है और दिलजले के गात का पतन होना असत्य बात है उसको स्थापित किया गया है।

(५) सुपत्र संचालित थे न हो रहे
नहीं स-शाखा हिलते फलादि थे
जता रहे थे निज स्नेह-शीलता
स्व-इंगितों से तरु-वृन्द इंगुदी

(६) न वास किंवा विष-कालिनाग से,
प्रभाव से भूधर के न भूमि के,
नितांत ही केशव-ध्यान-मग्न हो
पतंगजा थी असितांगिनी बनी

(७) द्वार नहीं ये हैं, अति भीषण
मुँह खोले हैं खड़े निशाचर

(२) हेत्वपह्नुति

सत्य बात (उपमेय) का निषेध करके असत्य बात (उपमान) की स्थापना की जाय और ऐसा करने का हेतु भी साथ ही साथ बता दिया जाय।

(१) मुख नाहीं यह चन्द्र है, जारत रसिक सरोज

मुख को देखकर कहता है यह मुख नहीं है, यह तो चन्द्रमा है, क्योंकि यह (रसिक-रूप) कमलों को जलाता है। मुख कमलों को जलाता नहीं इसलिये यह मुख नहीं है।

यहां सत्य बात मुख का निषेध करके असत्य बात चन्द्रमा की स्थापना की गई और ऐसा करने का हेतु भी बताया गया कि यह कमलों को जलाता है और मुख नहीं जला सकता।

(२) अंग अंग जारै अरी, ज्वाला देखु कराल
सिंधु उठी बड़वागि यह, नहीं इन्दु भवभाल

चन्द्रमा को देखकर कहती है कि यह चन्द्रमा नहीं है यह तो समुद्र मे उठी हुई वडवाग्नि है, क्योंकि चन्द्रमा शीतल होता है तथा वह अंग-प्रत्यग को नहीं जलाता और इधर यह भयकर-ज्वालावाला एवं अगों को जलानेवाला है।

यहाँ सत्य बात चन्द्र का निषेध करके असत्य बात वडवाग्नि का होना कहा गया और साथ ही इसका हेतु भी बताया गया।

(३) पर्यस्तापह्नुति

किसी वस्तु के धर्म का उस वस्तु में होना निषेध करके अन्य किसी वस्तु मे उस धर्म का होना कहा जाय।

किसी वस्तु के लिये कह दिया जाय कि वह वह वस्तु नहीं है किंतु अन्य कोई वस्तु वह वस्तु है।

(४) अहह ! अहह ! देखो, टूटता है न तारा
पतन दिल-जले के गात का हो रहा है

तारा टूटना सत्य बात है उसका निषेध किया गया है और दिलजले के गात का पतन होना असत्य बात है उसको स्थापित किया गया है।

(५) सुपत्र संचालित थे न हो रहे
नहीं स-शाखा हिलते फलादि थे
जता रहे थे निज स्नेह-शीलता
स्व-इंगितों से तरु-वृन्द इंगुदी

(६) न वास किंवा विष-कालिनाग से,
प्रभाव से भूधर के न भूमि के,
नितांत ही केशव-ध्यान-मग्न हो
पतंगजा थी असितांगिनी बनी

(७) द्वार नहीं ये हैं, अति भीषण
मुँह खोले है खड़े निशाचर

(२) हेत्वपह्नुति

सत्य बात (उपमेय) का निषेध करके असत्य बात (उपमान) की स्थापना की जाय और ऐसा करने का हेतु भी साथ ही साथ बता दिया जाय।

(४) अहह ! अहह ! देखो, टूटता है न तारा
पतन दिल-जले के गात का हो रहा है

तारा टूटना सत्य बात है उसका निषेध किया गया है और दिलजले के गात का पतन होना असत्य बात है उसको स्थापित किया गया है।

(५) सुपत्र संचालित थे न हो रहे
नहीं स-शाखा हिलते फलादि थे
जता रहे थे निज स्नेह-शीलता
स्व-इंगितों से तरु-वृन्द इंगुदी

(६) न वास किंवा विष-कालिनाग से,
प्रभाव से भूधर के न भूमि के,
नितांत ही केशव-ध्यान-मग्न हो
पतंगजा थी अमितांगिनी बनी

(७) द्वार नहीं ये हैं, अति भीषण
मुँह खोले हैं खड़े निशाचर

(२) हेत्वपह्नुति

सत्य बात (उपमेय) का निषेध करके असत्य बात (उपमान) की स्थापना की जाय और ऐसा करने का हेतु भी साथ ही साथ बता दिया जाय।

(३) साँवरो सलोनो गात, पीतपट सोहत सो,
अम्बुज-से आनन पै परैं छवि ढरकी
मंत्र ऐसी, जंत्र ऐसी, तंत्र-सी तरकि परैं
हँसनि चलनि चितवनि त्यों सुघर की
'गोकुल' कहत वन कुंजन को वासी, लखे
हाँसी-सी करतु है री काम कलाधर की
एतने में बोली और, मिले हरि सुखदानी ?,
नाही, मैं कहानी कही राम रघुवर की

कोई गोपी कृष्ण का वर्णन कर रही थी। इतने में किसी और गोपी ने पूछा—क्या कृष्ण तुम्हे मिले ? पहली गोपी ने अपने भेद को छिपाने के लिये कहा—नहीं मैं तो राम की कथा कह रही हूँ।

यहाँ सत्य वात कृष्ण-कथा को छिपा कर असत्य वात राम-कथा की स्थापना की गई। इस छद की पहली तीन पंक्तियाँ राम और कृष्ण दोनो पर लागू हो सकती हैं।

नोट—इस अलकार के विशेष उदाहरणो के लिये देखो खुसरो की मुकरियाँ (खुसरो और उसकी हिन्दी कविता, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से प्रकाशित)।

आँसुओं के वहाने दुःख-घटा वरसती रही अर्थात् नेत्रों से आँसू नहीं गिरते थे किंतु दुःख-घटा के मेघों से बूँदें गिरती थीं। यहाँ सत्य वस्तु आँसू का निषेध करके असत्य वस्तु जलबिंदुओं का गिरना कहा गया।

(४) सुपक्क पीले फल-पुंज व्याज से
अनेक बालेंदु स्वअङ्क में उगा
उड़ा दलों व्याज हरी हरी ध्वजा
नितांत केला कलकेलि-मग्न था

(५) उत्कर्ष देख निज-अङ्क-पले शशी का
है वारिराशि मिस-कैरव हृष्ट होता

(६) भ्रान्तापहुति

जब असत्य बात का निषेध करके सच्ची बात बताई जाय और इस प्रकार किसी की भ्रांति को दूर करने का प्रयत्न किया जाय।

उदाहरण

(१) कह प्रभु हँसि, जनि हृदय डराहू
लूक न, असनि न, केतु न राहू
ये किरीट दसकंधर केरे
आवत बालि-तनय के प्रेरे

रावण के मुकुट उछलकर वानरों को बक नाग आदि की भ्रांति हुई अर्थात वानरों ने मुकुटों को बक आदि समझा और डरे। रामचन्द्रजी ने कहा कि ये बक या नाग या केतु नहीं हैं किन्तु रावण के मुकुट हैं। इस प्रकार उन्होंने असत्य बात का निषेध करके और सत्य बात बतला करके वानरों की भ्रांति दूर की।

(२) बेसर-मोती-दुति-झलक परी अधर पर आय
चूनो होय न, चतुर तिय, क्यों पट पोंछ्यो जाय ।

नायिका के मुख पर नाक मे पहने हुए मोती की श्वेत झलक पडती है। नायिका दर्पण मे देखकर इस झलक को चूना समझती है अर्थात् उसे चूने की भ्रांति हो जाती है और वह उसे बारबार कपडे से पोंछने का प्रयत्न करती है पर वह पुछता नहीं। कोई सखी उससे कहती है कि यह चूना नहीं है, मोती की झलक है और इस प्रकार उसकी भ्रांति दूर करने का प्रयत्न करती है।

(३) न सिर पर जटायें, बाल है किन्तु गूंथे
गरल नहि गले मे, किन्तु कस्तूरिका है
विरह-धवलिमा है, भस्म ना अंग में है
अयि मदन, मुझे क्यों मारता ईश-धोखे ?

यहाँ जटा, गरल और भस्म इन बातों का निषेध करके गूँथे हुए बाल, कस्तूरी और विरह-धवलिमा इन सत्य बातों का होना बताया गया है और जो काम का भ्रम महादेव को हो रहा था उसे दूर करने का प्रयत्न किया गया है।

विशेष उदाहरण

(१) रात माँझ रवि होय नहिं, ससि नहिं, तीव्र सु लागि
वारिधि में अवलोकिये उठी यहै बड़वागि

(२) मुख के मिस देखहु उग्यो यह निकलंक मयंक

(३) हैं गर्जते घन, नही बजते नगारे
विद्युल्लता चमकती, न कृपाण-जाल है
धारा, नही बरसती यह बाण-धारा
आई घटा, यह नही शिवराज-सेना

(४) अरध-रात वह आवै भौन
सुंदरता बरनै सखि कौन
देखत ही मन होय अनंद
क्यों सखि साजन ? ना सखि चंद

(१) संबंधातिशयोक्ति

जब दो वस्तुओं मे संबध न होने पर भी दोनों मे सबध दिखाया जाय या अयोग्य में योग्यता बताई जाय।

उदाहरण

(१) फवि फहरैं अति उच्च निसाना
जिन महॅ अटकहिं विबुध-विमाना

वास्तव मे निसान इतने ऊँचे नहीं कि विमानें के साथ उनका (अटकने का) सबध हो सके पर निसानें की अत्यन्त प्रशंसा करने के लिये यह संबंध होना बताया गया है।

निसान विमाने तक पहुॅचने की योग्यता नहीं रखते फिर भी उनमे यह योग्यता बताई गई है।

(२) जो संपदा नीच-गृह सोहा
सो विलोकि सुर-नायक मोहा

नीच-घर की सपदा इस योग्य नहीं हो नकती कि इद्र को मोह हो जाय। तो भी यहाॅ सपदा की अत्यन्त प्रशसा के लिये अयोग्य होने पर भी उसमे यह योग्यता बताई गई है।

मुख के सामने चन्द्रमा आदर प्राप्त करने की योग्यता रखता है पर फिर भी उसे आदर के अयोग्य बताया गया है।

(३) तव कर आगे कलपतरु क्यों पावै सनमान ।

कल्पवृक्ष सन्मान पाने योग्य है पर फिर भी सन्मान के अयोग्य बताया गया है।

(४) जो सुख भा सिय मातु मन देखि राम-बर-बेष
सो न सकहिं कहि कल्प सत सहस सारदा सेष

(२) अक्रमातिशयोक्ति

जब कारण और कार्य एक ही साथ हों।

नोट—कारण सदा पहले होता है और तब कार्य होता है पर यहाँ अत्यन्त प्रशंसा के लिये दोनों का एक साथ होना कहा जाता है।

उदाहरण

(१) धनु सो सर, अरि-देह सों प्राण, छुट्यो इक संग

धनुष से बाण छूटना वैरी के प्राणों के छूटने का कारण है। पहले बाण छूटा, जो जाकर शरीर में लगा और तब प्राण छूटे। पर यहाँ अत्यन्त प्रशंसा के लिये बाण और प्राण का एक साथ छूटना कहा गया अर्थात् कारण और कार्य एक साथ हुए।

(२) नगर व्यापि गई बात सुतीछी
छुअत चढ़ी जनु सब तन बीछी

बीछू का छूना—कारण है। चढ़ जाना—कार्य है।
छूते ही विष चढ गया।

(५) अत्यन्तातिशयोक्ति

जब कारण होने के पहले ही कार्य हो जाय।

उदाहरण

(१) हनूमान के पूँछ में लगन न पाई आगि
लंका सिगरी जरि गई, गये निसाचर भागि

पूँछ मे आग लगना—कारण है।
लका जलना—कार्य है।

पूँछ मे आग लगने के पहले ही लका जल गई अर्थात् कारण के पहले ही कार्य हो गया।

(२) ग्राह-गृहीत-गयंद-दुख कढन न पाई आहि
पहिले ही हरि आइ कै निज कर उधर्यो ताहि

(२) वह चितवनि औरै कछू जिहि वस होत सुजान

ससार मे तीक्ष्ण एव वड़े वडे नेत्र बहुत-से है पर वह चितवन कुछ और ही है जो सज्जनों को वश मे करती है। यहां पर यद्यपि वर्णन-गत चितवन और चितवनो से भिन्न नहीं है पर फिर भी उसे भिन्न बताया गया है।

(३) न्यारी रीति भूतल निहारी सिवराज की

यहाँ न्यारी शब्द से शिवाजी की रीति को अन्य रीतियों से भिन्न बतला कर उसकी अत्यन्त प्रशंसा की है।

(७) रूपकातिशयोक्ति

जब उपमेय का कथन न करके केवल उपमान का कथन किया जाय और उपमान के कथन से ही उपमेय का ज्ञान हो जाय।

(१) आचार्य, देखो तो नया यह सिंह सोते से जगा

यहाँ अभिमन्यु उपमेय है और सिह उपमान है पर उपमेय अभिमन्यु का कथन नहीं किया गया। सिह कहने से अभिमन्यु का अर्थ समझा जा सकता है।

(२) कनकलता पर चन्द्रमा धरे धनुप दोइ वान

सोने की लता पर चन्द्रमा है जिसमे दो धनुप बाण रखे हुए हैं। यह वास्तव मे किसी स्त्री का वर्णन है जिसमे कनकलता,

चन्द्रमा, धनुष और बाण ये चारों उपमान हैं और स्त्री, मुखमण्डल भृकुटी और चितवन क्रम से इनके उपमेय हैं।

(३) कनकलतानि इन्दु, इन्दु माँहि अरविंद,

झरैं अरविन्दन तें बुन्द मकरन्द के

कनक-लता पर चन्द्रमा है, चन्द्रमा में कमल हैं, कमलों से मकरन्द-बिन्दु झड़ते हैं।

यह भी किसी सुन्दरी स्त्री का वर्णन है। कनकलता, चन्द्रमा कमल और मकरंद-बिन्दु उपमान हैं जिनके उपमेय क्रम से स्त्री, मुखमण्डल, नेत्र और आँसू हैं।

(४) अद्भुत एक अनूपम बाग

जुगल कमल पर गजवर क्रीड़त, ता पर सिंह करत अनुराग
हरि पर सरवर, सर पर गिरिवर, गिरि पर फूले कंज पराग
रुचिर कपोत बसत ता ऊपर, तेहि ऊपर अमरित-फल लाग
फल पर पहुप, पुहुप पर पालव, तापर सुक पिक मृगमद काग
खंजन धनुष, चन्द्रमा, ऊपर ता ऊपर एक मणिधर नाग

एक अनुपम बाग है जिसमें ये वस्तुएँ हैं। दो कमल हैं उन पर हाथी खेलता है उसके ऊपर सिंह है सिंह पर एक सरोवर है सरोवर पर पहाड़ है पहाड़ पर कमल फूले हैं कमलों पर कपोत है कपोत पर अमृतफल है फल पर पुष्प है पुष्प पर

(१) काम कुसुम-धनु-सायक लीन्हे
सकल भुवन अपने वस कीन्हे

भुवनों को वश मे करने के लिये धनुप-वाण की आवश्यकता होती है अतः धनुप-वाण भुवन-विजय का कारण हुआ। काम के पास धनुप-वाण हैं तो सही पर वे मजबूत न होकर फूलों के वने हुए हैं। फूलों के धनुप-वाण से भुवन-विजय का कार्य नहीं हो सकता। पर यहाँ उस अधूरे कारण से कार्य का होना कहा गया है।

(२) तो सो को सिवाजी, जेहि दो सौ आदमी सों
जीत्यौ जंग सरदार सौ हजार असवार को

शिवाजी ने दो सौ आदमियों से हजार-सवारोंवाले सरदार को विजय कर लिया। विजय का कारण दो सौ आदमी हैं। कारण है तो सही पर हजार आदमियों के जीतने के योग्य नहीं अर्थात् कारण अपर्याप्त है। इस अपर्याप्त कारण से ही विजय-रूप कार्य सिद्ध हो जाता है।

(३) महामत्त गजराज कहँ वस कर अंकुस खर्व

अंकुस कारण है। महामत्त गजराज को वश मे करना कार्य है। कारण विद्यमान है पर इस योग्य नहीं कि इतना बडा कार्य सिद्ध हो सके। फिर भी कार्य हो जाता है। अत यहाँ अपूर्ण कारण से कार्य हुआ।

(३) तृतीय विभावना

जब रुकावट के होने पर भी कार्य हो जाय।

(१) तेज छत्र-धारीन हू तव अति ताप करंत

तेरा तेज छत्रधारियों को भी अत्यन्त ताप करता है। ताप करना कार्य है और तेज उसका कारण है। तेज ताप करता है यह ठीक है। पर कार्य के होने में एक रुकावट है। लोगों के पास छत्र हैं। छत्र होने पर तेज ताप नहीं कर सकता। परन्तु यहाँ छत्र-रूप रुकावट होने पर भी ताप करना रूपी कार्य हो जाता है।

(२) विपदा हू में होय के पर-दुख हरत महान

महापुरुष पराया दुःख हरते हैं यह तो ठीक है पर महापुरुषों के कार्य में एक रुकावट है। वे स्वयं विपत्ति में हैं फिर पराया दुःख कैसे हर सकते हैं। पर यहाँ यह रुकावट होने पर भी परदुःख-हरण रूपी कार्य हो जाता है।

(३) निस-दिन श्रुति-संगति तऊ नयन राग की खान

श्रुति (वेदों) का संग होने पर राग (द्वेष आदि मनोराग) नहीं रह सकते। श्रुति-संग राग की स्थिति के लिये रुकावट है। परन्तु इस रुकावट के होने पर भी—श्रुति-संग (कानों का साथ) होने पर भी—नेत्र राग (ललाई या प्रेम) से भरे ही रहते हैं। नोट—यहाँ श्रुति और राग शब्दों में श्लेष है।

(४) ए मुँहजोर तुरग लौं ऐंचत हू चलि जायँ

खींचने पर कोई चीज दूर नहीं जा सकती। दूर जाने के लिये खींचना एक रुकावट है। पर इस रुकावट के होने पर भी—खींचे जाने पर भी—नेत्र अन्यत्र चले जाते हैं।

(४) चतुर्थ विभावना

जो कार्य का कारण नहीं है उस कारण से कार्य उत्पन्न हो जाय।

नोट—प्रत्येक कार्य का अपना कारण होता है। जब कार्य अपने कारण से न होकर किसी दूसरे कारण से हो वहां चतुर्थ विभावना होती है।

(१) निकसी नीरज-नाल तें चंपक कलिका पांच

चंपक की कली चंपक लता से निकलती है न कि कमलनाल से, अर्थात् चंपक की कली का कारण चंपकलता है न कि कमल-नाल। पर यहां कहा गया है कि चंपक की कलियां कमलनाल से निकलीं। अतः कार्य की उत्पत्ति भिन्न कारण से कही गई।

नोट—इस दोहे में रूपकातिशयोक्ति है—

नीरजनाल—हाथ।
चंपककलिका—पांच अँगुलियां।

(२) बीणा-नाद जु शंख सों होत, सुनों दै कान

किसी को पै गन्नावार ठठ से वीणा का-सा मीठा स्वर निकलता है। वीणानाद का कारण वीणा है न कि शंख। पर यहाँ शंख से वीणानाद निकलता है।

(५) पंचम विभावना

जब विपरीत कारण से कार्य उत्पन्न हो।

(१) सखी, करत संताप मोहि सीतल-किरन मयंक

चन्द्रमा की ठंढी किरणें सन्ताप करती हैं। सन्ताप का कारण गर्म किरणें होती हैं न कि शीतल किरणें। शीतल किरणों का कार्य तो शीतल करना है। पर यहाँ शीतल किरणें सन्ताप करती हैं, इसलिए यहाँ कार्य का जो कारण है उसके विपरीत कारण से कार्य हुआ।

(२) कारे कारे घन आ-आकर अंगारे बरसाते हैं।

श्याम घटा पानी बरसाती है न कि अंगारे। अंगारों की उत्पत्ति जल के विपरीत किसी वस्तु से होनी चाहिए पर यहाँ जल से ही अंगार-वर्षा रूप कार्य होता है

(३ सुधा-समोये बदन ते तू रि बकै विष-बैन

विष वचन की उत्पत्ति किसी विषैली वस्तु से होनी चाहिए थी न कि सुधा-सने मुख से जो उसके विपरीत है। पर यहाँ विपरीत कारण से ही कार्य उत्पन्न होता है

(४) सिय-हिय सीतल भो लगे जरत लंक की झारि

अग्नि से हृदय जलता है न कि शीतल होता है। पर यहाँ अग्नि की लपट से हृदय शीतल हुआ।

(५) खेल-खिझाकर भी आर्यों को वे सब यहाँ रिझाते हैं

खिझाने से रीझना विपरीत कारण से कार्य का होना है।

(६) षष्ठ विभावना

जब कार्य से कारण की उत्पत्ति हो।

नोट—ससार में सदा कारण से कार्य की उत्पत्ति होती है पर इस विभावना में इसके विपरीत होता है।

(१) तुव कृपान धुव धूम ते भयो प्रताप कृसानु

साधारणतया अग्नि से धुआँ उत्पन्न होता है अर्थात् अग्नि कारण है और धुआँ कार्य। पर यहाँ (कृपाण रूपी) धुएँ से (प्रताप-रूपी) अग्नि उत्पन्न हुई है। अत· कार्य से कारण उत्पन्न हुआ।

(२) नयन-मीन तें प्रगट भइ देखहु सरिता-धार

साधारणतया सरिता से मछली उत्पन्न होती है अर्थात् सरिता मछली का कारण है। पर यहाँ (नयनरूपी) मछली से (आँसूरूपी) सरिता उत्पन्न हुई। अत· कार्य से कारण का होना कहा गया है।

(३) कर-कल्पद्रुम सों कियौ जस-समुद्र उत्पन्न

कल्पद्रुम का कारण समुद्र है। पर यहां समुद्र की उत्पत्ति कल्पद्रुम से कही गई है।

(४) लोचन-नीरज से यह देखो
अश्रु-नदी बह आई है

यहां कमल से नदी का उत्पन्न होना कहा गया।

विशेषोक्ति

जब कारण के विद्यमान होने पर भी कार्य न हो।

विशेषोक्ति में –

(१) किसी कार्य के होने के लिये जो कारण आवश्यक हैं वे विद्यमान रहते हैं।

(२) उनके विद्यमान होने पर भी कार्य नहीं होता।

उदाहरण

(१) नीर-भरे नितप्रति रहैं, तऊ न प्यास बुझाइ

नेत्र पानी से भरे रहते हैं तो भी (दर्शन की) प्यास नहीं बुझती। पानी प्यास के बुझने का कारण है, पानी होने पर प्यास बुझ जानी चाहिए। पर यहाँ पानी भरा रहने पर भी प्यास नहीं बुझती। पानी कारण के विद्यमान होने पर भी प्यास बुझना कार्य नहीं होता।

(२) दौलत इन्द्र समान बढ़ी
पै खुमान को नेक गुमान न आयो

इन्द्र की जितनी सपत्ति बढ गई पर तो भी शिवा जी को जरा भी गर्व उत्पन्न नहीं हुआ।

अर्थान्तर न्यास के भेद

अर्थान्तर न्यास के दो भेद हैं—

(१) प्रथम अर्थान्तर न्यास—जब सामान्य का समर्थन विशेष से किया जाय।

(२) द्वितीय अर्थान्तर न्यास—जब विशेष का समर्थन सामान्य से किया जाय।

उदाहरण

(१) प्रथम भेद

(१) टेढ़ जानि संका सब काहू
वक्र चन्द्रमहि ग्रसै न राहू

पहले एक सामान्य बात कही गई कि टेढ़ा देखकर सभी भय खाते हैं। फिर इस सामान्य बात के समर्थन मे चन्द्रमा और राहु का उदाहरण दिया गया। अर्थात् यह सामान्य बात चन्द्रमा और राहु पर घटाई गई।

(२) कारन तें कारज कठिन, होइ दोप नहिं मोर।
कुलिस अस्थि तें, उपल तें लोह, कराल कठोर॥

पहले एक सामान्य बात कही गई कि कारण से कार्य सदा कठोर होता है और फिर दो वस्तुओं का उदाहरण देकर उसका समर्थन किया गया—जिस प्रकार अस्थि से उत्पन्न वज्र अस्थि से कठोर होता है और पत्थर से उत्पन्न लोहा पत्थर से कठोर होना

(३) मचल रहा है मन मत्त हो उसी के लिये
यद्यपि उसी का सदा मन में निवास है।
रूप-सुधा-पान से न नेक भी हुई है कम
प्रत्युत हुई है तीव्र कैसी यह प्यास है ?

अर्थान्तरन्यास

जब किसी सामान्य बात का विशेष बात से, या किसी विशेष बात का सामान्य बात से, समर्थन किया जाय।

अर्थान्तरन्यास में—

(१) पहले कोई सामान्य बात कहते हैं और फिर वैसी ही कोई विशेष बात कह कर अर्थात् उदाहरण देकर उस सामान्य बात का समर्थन (या पुष्टि) करते हैं। या,

(२) पहले कोई विशेष बात कहते हैं और फिर वैसी ही कोई सामान्य बात कहकर उसका समर्थन करते हैं।

नोट—जो बात किसी एक वस्तु या व्यक्ति से सम्बन्ध रखती है वह विशेष बात होती है और जो बात किसी वस्तु या व्यक्ति-विशेष से सम्बन्ध नहीं रखती और सब पर लागू होती है वह सामान्य बात कहलाती है।

(२) द्वितीय भेद

(१) दियो अभय अमरन्ह, कियो हर हालाहल पान
पर-उपकारन हित सहैं कष्ट कहा न महान ?

यहाँ पहले हर अर्थात् महादेव जी के सम्बन्ध की एक विशेष बात कही कि महादेव जी ने समुद्र-मन्थन से निकलते हुए हालाहल विष का पान कर लिया और देवताओं को अभय-दान दिया। उन्होंने स्वयं कष्ट सहन करके भी दूसरों का उपकार किया। इस विशेष कथन का समर्थन एक सामान्य कथन-द्वारा किया कि महापुरुष परोपकार के लिए क्या क्या कष्ट नहीं सहते ?

(२) हरि राख्यो गोकुल विपद, का नहिं करहिं महान।

यहाँ पहले एक व्यक्ति हरि अर्थात् श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में एक बात कही कि हरि ने विपत्ति में गोकुल की रक्षा कर ली। फिर इस बात का समर्थन सामान्य कथन से किया कि महान् पुरुष क्या नहीं कर सकते ?

(३) कौन बड़ाई उदधि मिलि गंग नाम भो धीम।
केहि की महिमा नहि घटी पर-घर गये रहीम ॥

यहाँ पहले एक विशेष कथन गंगा के सम्बन्ध में किया कि समुद्र में जाने से गंगा का नाम भी मिट गया इस विशेष कथन के समर्थन में यह सामान्य कथन करते हैं कि पराये घर जाने से सबकी महिमा घट जाती है।

स्मरण

जब पहले देखी हुई या सुनी हुई किसी वस्तु का स्मरण, उसके समान या उससे सम्बन्ध रखनेवाली किसी वस्तु को देखने या सुनने से, हो जावे।

स्मरण में—

(१) कोई वस्तु पहले देखी हुई या सुनी हुई होती है।

(२) वैसी ही या उससे सम्बन्ध रखनेवाली कोई वस्तु हम फिर कभी बाद में, देखते या सुनते हैं।

(३) ऐसा होने से पहले देखी या सुनी हुई वस्तु का स्मरण हो जाता है।

उदाहरण

(१) प्राची दिसि ससि उगेउ सुहावा,
सिय मुख सरिस देखि सुख पावा।

रामचन्द्र जी ने सीता का मुख पहले देखा था किन्तु अब वह सामने नहीं है। अब वे पूर्व दिशा में उदित चन्द्रमा को देखते हैं जो सीता के मुख के समान है। सीता के मुख के समान चन्द्रमा को देखने से उन्हे पहले देखे हुए सीता के मुख की याद हो आती है।

(२) बीच बास करि जमुनहि आये,
निरखि नीर लोचन छवि छाये।

भरत जी ने श्याम-शरीर राम को पहले देखा था। अब उन्होंने यमुना के श्याम-वर्ण पानी को देखा। राम के शरीर के समान श्याम पानी को देखकर भरत जी को पहले देखे हुए राम के शरीर की याद हो आई।

(३) जो पाती हूँ कुँवर-वर के जोग में भोग प्यारा,
तो होती हैं हृदयतल में वेदनायें अनेकों।

यशोदा को श्रीकृष्ण के योग्य भोज्य वस्तु देखकर श्रीकृष्ण की याद हो आती है और वे व्याकुल हो उठती हैं। यहाँ भोज्य वस्तु का श्रीकृष्ण के साथ सम्बन्ध है और इस सम्बन्ध के कारण यशोदा को श्रीकृष्ण की याद आती है।

(४) जो होता है उदित नभ में कौमुदी-कांत आके
या जो कोई कुसुम विकसा देख पाती कहीं हूँ।
शोभे-शाले-हरित दल के पादपों को विलोके,
प्यारा-प्यारा विकच मुखड़ा है मुझे याद आता॥

[illegible] को श्रीकृष्ण के मुख के सदृश चन्द्र, कुसुम और श्याम वृक्ष के देखने पर कृष्ण के मुख की याद आ जाती है।

(५) सायं प्रातः [illegible] मे [illegible]
प्यारी प्यारी मधुर ध्वनियाँ मत्त हो हैं सुनाते

मैं पाती हूँ मधुर ध्वनि में कूजने में, खगों के,
मीठी तानें परमप्रिय की मोहिनी वंशिका की ॥

राधा को पक्षियों का कूजन एवं मधुर ध्वनि सुनकर श्रीकृष्ण की वंशी की तानें याद आ जाती हैं।

(६) छू देती है मृदु पवन जो पास आ गात मेरा,
तो हो जाती परम सुधि है श्याम-प्यारे-करों की।

श्रीकृष्ण के कर-स्पर्श के समान पवन-स्पर्श का अनुभव करके राधा को श्रीकृष्ण के करों की याद आ जाती है।

व्यतिरेक

जब उपमेय को उपमान की अपेक्षा बढ़कर बताया जाय।

व्यतिरेक में—

(१) उपमेय में उपमान की अपेक्षा कोई विशेषता बताई जाती है।

(२) उपमान में उपमेय की अपेक्षा कोई हीनता बताई जाती है।

उदाहरण

प्रथम प्रकार

(१) मुख मयंक सो है सही, मधुर वचन सविशेष।

यहाँ मुख की उपमा मयङ्क से दी गई है—दोनों की समानता बताई गई है—पर मुख में कुछ विशेपता बताई गई है। मयङ्क से मधुर वचन नहीं निकलते, मुख से मधुर वचन निकलते हैं—इस प्रकार मुख को मयङ्क की अपेक्षा बढकर बताया गया है।

(२) साधू ऊँचे शैल सम, किंतु प्रकृति सुकुमार।

यहाँ साधुओं को उपमा शैलों से दी गई है परन्तु समानता होने पर भी साधुओं में शैलों की अपेक्षा कुछ विशेपता है—शैल कठोर होते हैं परन्तु साधु कोमल प्रकृति के होते हैं।

(३) नव-विधु-विमल, तात, जस तोरा,
रघुवर - किंकर - कुमुद - चकोरा।
उदित सदा, अथइय कबहूँ ना,
घटिहि न जग-नभ दिनदिन दूना॥

यहाँ भरत के यश की उपमा नव विधु से दी गई है परन्तु समानता होने पर भी भरत के यश मे नव विधु की अपेक्षा कुछ विशेपता है। नव विधु कभी उदित होता है कभी अस्त, कभी घटता है कभी बढता है, पर भरत का यश सदा उदित रहता है, कभी अस्त नहीं होता। दिन-दिन बढता है, कभी घटता नहीं।

द्वितीय प्रकार

(१) जनम सिन्धु, पुनि बन्धु विष, दिन मलीन, सकलङ्क।
सिय-मुख-समता पाव किमि, चन्द बापुरो रङ्क?

यहाँ उपमेय सियमुख की अपेक्षा उपमान चन्द्र में कई हीनतायें बताई गई हैं।

(१) गिरा मुखर, तन अर्थ भवानी,
रति अति दुखित अतनु पति जानी।
विष वारुनी बन्धु प्रिय जेही,
कहिय रमा सम किमि वैदेही ?

यहाँ गिरा, भवानी, रति और रमा चार उपमान हैं एव वैदेही उपमेय है। चारों उपमानों में उपमान की अपेक्षा हीनता बताई गई है।

प्रतीप

जब उपमेय को उपमान और उपमान को उपमेय बना दिया जाय।

उदाहरण

(१) चन्द्रमा मुख के समान सुन्दर है।

प्राय मुख की उपमा चन्द्रमा से दी जाती है क्योंकि चन्द्रमा प्रसिद्ध सुन्दर वस्तु है। पर यहाँ उलट करके चन्द्रमा उपमेय बना दिया गया है और मुख, जा उपमेय होना चाहिए था, उपमान बना दिया गया है। अत यहाँ प्रतीप है।

(२) काहे करत गुमान मुख, तुव सम मंजु मयंक।

हे मुख, क्यों गर्व करते हो ? चन्द्रमा तुम्हारे समान सुन्दर है।

यहाँ चन्द्रमा को, जो प्रसिद्ध उपमान है, उपमेय और मुख को उपमान बनाया गया है।

प्रतीप के भेद

पहला प्रतीप

जब प्रसिद्ध उपमान का उपमेय करके उपमेय को उपमान बना दिया जाय।

उदाहरण

(१) चन्द्रमा मुख के समान सुन्दर है।

यहाँ वर्णन मुख का है इसलिये मुख उपमेय और चन्द्रमा उपमान है। पर चन्द्रमा को उपमेय बनाकर मुख को उपमान बना दिया है।

यहाँ पर—

(१) चन्द्रमा उपमेय

(२) मुख उपमान है।

पर वास्तव में—

(१) मुख उपमेय

(२) चन्द्रमा उपमान है।

इस प्रकार क्रम उलटा कर देने से यहाँ प्रथम प्रतीप हुआ।

(२) विदा किये वटु विनय करि फिरे पाय मन काम।
उतरि नहाये जमुन जल जो सरीर सम श्याम॥

यहाँ यमुना जल को उपमेय वनाकर उसकी श्रीराम के श्याम शरीर से उपमा दी गई है, पर वास्तव में यमुनाजल प्रसिद्ध उपमान और श्याम शरीर उपमेय है।

यहाँ पर—

(१) यमुनाजल उपमेय।

(२) (श्रीराम का श्याम) शरीर उपमान है।

पर वास्तव में—

(१) (श्रीराम का श्याम) शरीर उपमेय।

(२) यमुनाजल—उपमान होना चाहिए।

उलटा क्रम कर देने से यहाँ प्रथम प्रतीप हुआ।

(३) सन्ध्या फ़ूली परम प्रिय की कांति-सी है दिखाती।
पाई जाती वर वदन-सी ओप आदित्य में है॥

यहाँ सन्ध्या और आदित्य इन प्रसिद्ध उपमानों को उपमेय वनाकर श्रीकृष्ण की श्याम कान्ति और उनके वदन को, जो वास्तव में उपमेय हैं, उपमान बनाया गया है।

यहाँ पर –

(१) सन्ध्या और आदित्य उपमेय।

(२) (प्रिय की) कांति और वदन उपमान हैं।

पर वास्तव में

(१) कांति और वदन उपमेय

(२) सन्ध्या और आदित्य उपमान होने चाहिए।

द्वितीय प्रतीप

जब उपमान को उपमेय बनाकर उपमान-द्वारा उपमेय का तिरस्कार करवाया जाय

उदाहरण

(१) तव सम मंजु मयंक मुख, काहे करत गुमान।

हे मुख, अपने सौन्दर्य का क्या गर्व करता है, आकाश में चन्द्रमा तेरे जैसा विद्यमान है।

यहाँ पर चन्द्रमा को उपमेय बना कर मुख को उपमान बनाया और फिर चन्द्रमा-द्वारा मुख का अनादर कराया गया।

(२) का घूँघट मुख मूँदहु अबला नारि,
चाँद सरग पर सोहत यहि अनुहारि।

[illegible]

तृतीय प्रतीप

जब उपमान को उपमेय मानकर उपमेय-द्वारा उपमान का अनादर कराया जाय।

उदाहरण

(१) तव समान मुख मंजु, शशि, काहे करत गुमान।

हे चन्द्रमा, अपने सौंदर्य का क्या गर्व करता है, मुख तुम्हारे समान है।

यहाँ चन्द्रमा उपमान है और मुख उपमेय; परन्तु चन्द्रमा से बात कही जा रही है मानो वह उपमेय हो। यहाँ उपमान को उपमेय बनाया नहीं किन्तु उपमान को उपमेय माना है। फिर उसका उपमेय मुख-द्वारा अनादर करवाया है।

(२) पाहन, जिय जनि गर्व कर, हौ ही कठिन अपार।
चित दुरजन के देखियत तो सों लाख हजार॥

यहाँ पाहन को उपमेय मान कर उससे बात कही गई है। फिर दुर्जन-चित्त-रूप उपमेय-द्वारा उसका अनादर कराया गया है

चतुर्थ प्रतीप

पहले उपमान की उपमा उपमेय से देकर फिर उस उपमा को ठीक न बताया जाय।

यह उपमा चाहे शब्दों मे प्रकट रूप से दो जाय चाहे समझ ली जाय ।

उदाहरण

(१) प्राची दिसि ससि उगेउ सुहावा,
सिय-मुख सरिस देखि सुख पावा ।
बहुरि विचार कीन्ह मन माहीं,
सीय वदन सम हिमकर नाहीं ॥

यहाँ वास्तव में—
(१) सियमुख उपमेय ।
(२) शशि उपमान है ।

पर यहाँ पर—
(१) शशि उपमेय ।
(२) सियमुख उपमान बनाया गया है ।

पहले शशि की उपमा सियमुख से दी गई पर फिर उस
उपमा के लिये कहा गया कि यह ठीक नहीं है—शशि सियमु
के समान नहीं हो सकता ।

नोट—यहाँ उपमा शब्दों में प्रकट की गई है

(२) कंज विचारो है सकल, सुघर न नैन समान ।

यहाँ वास्तव में (१) नैन उपमेय और (२) कंज उपमान
पर क्रम उलट करके कंज को उपमेय और (२) नैन को उप

बनाया गया है। पहले उपमा दी कि कज नैन के समान है पर बाद में कहा गया कि कज नैन की बराबरी नहीं कर सकता। (अतः यह उपमा ठीक नहीं)।

नोट—यहां उपमा शब्दों में प्रकट नहीं है।

(३) तो मुख ऐसो पंकसुत कह्यो कवन विधि जाय।

पहले मानो पंकज की उपमा मुख से दी गई फिर कहा गया कि पंकज मुख के समान नहीं कहा जा सकता, अतः यह उपमा ठीक नहीं।

नोट—यहाँ उपमा शब्दों में प्रकट नहीं है। उसका अध्याहार करना पडता है।

पंचम प्रतीप

उपमान का कार्य उपमेय ही कर सकता है फिर उपमान की क्या आवश्यकता है, यों कहकर जब उपमान को व्यर्थ बताया जाय।

उदाहरण

(१) मुख आलोकित जग करै कहा चन्द केहि काम

मुख सर्वत्र आलोक फैला देता है तो चन्द्रमा किस काम का? चन्द्रमा का काम है आलोक फैलाना। जब मुख ही यह काम कर देता है तो चन्द्रमा की क्या आवश्यकता है, वह व्यर्थ है।

विशेष उदाहरण

(१) अमिय झरत चहुँ ओर सों नयन ताप हरि लैन

राधाजू को वदन अस, चन्द-उदय केहि हैन ?

(२) प्रभा करन, तमगुन-हरन धरन सहस कर राजु

तव प्रताप है जगत में, कहा भानु सों काजु ?

(३) कल्पवृक्ष केहि काम को जब है नृप जसवंत ?

(४) जग प्रकाश तव जस करै वृथा भानु यह देख

मानो विधि चहुँधा करै कुंडलि मिस परिलेख

प्रतिवस्तूपमा

(४) दोनों वाक्यों में धर्म का कथन करनेवाले शब्द या शब्दों के भिन्न होने पर भी उसका या उनका अर्थ भिन्न नहीं होता।

उदाहरण

(१) सोहत भानु प्रताप सों लसत सूर धनुवान

यहाँ ये दो वाक्य हैं—

(१) सोहत भानु प्रताप सों—उपमान वाक्य।

(२) लसत सूर धनु-बान—उपमेय वाक्य।

दोनों में एक ही धर्म 'शोभा देना' कहा गया है। पहले में वह सोहत शब्द से और दूसरे में लसत शब्द से प्रकट किया गया है। दो शब्द होने पर भी दोनों का अर्थ एक ही है।

(२) विखधर साँप न सेइये तजिये बैन-कठोर

यहाँ (१) तजिये बैन-कठोर उपमेय वाक्य है, तथा--

(२) विषधर साँप न सेइये यह उपमान वाक्य है।

'दोनों का एक ही धर्म छोड देना' कहा गया है। प्रथम वाक्य मे वह तजिये शब्द-द्वारा और द्वितीय वाक्य में न सेइये शब्दों द्वारा बताया गया है। तजिये और न सेइये का एक ही अर्थ है।

(३) तिन्हहिं सुहाइ न अवध-बनावा
चोरहि चाँदनि रात न भावा

यहाँ उक्त दो वाक्यों मे एक ही धर्म अच्छा न लगना कथित

किया गया है। प्रथम वाक्य में वह न सुहावा शब्दों-द्वारा और दूसरे में न भावा शब्दों-द्वारा कहा गया है।

अत्युक्ति

जब शूरता, सुन्दरता, उदारता, विरह, प्रेम और कीर्ति आदि का अत्यन्त वर्णन करने के लिये मिथ्यात्व-पूर्ण कथन किया जाय।

नोट १—अन्य बातों की अत्युक्ति भी हो सक्ती है पर अलङ्कार-शास्त्रियों ने इन्हीं छः को प्रधानता दी है।

नोट २—अतिशयोक्ति और अत्युक्ति में यह अन्तर होता है कि अतिशयोक्ति में कुछ सत्य का अंश अवश्य रहता है पर अत्युक्ति में कथन सर्वथा मिथ्यात्व-पूर्ण होता है।

उदाहरण

१ शूरता

(१) लखन सकोप वचन जब बोले
डगमगानि महि, दिग्गज डोले

यह लछमन की शूरता का अत्यन्त वर्णन करने के लिये पृथ्वी का डगमगाना और दिग्गजों का डोलना ये मिथ्यात्व-पूर्ण कथन किये गये वास्तव में न तो पृथ्वी डगमगाई और न दिग्गज ही डोले

(२) कहि दास तुलसी, जबहिं प्रभु
सर-चाप कर फेरन लगे
ब्रह्मांड, दिग्गज, कमठ, अहि, महि,
सिंधु, भूधर डगमगे

यहाँ श्रीराम की शूरता का अत्यन्त वर्णन करने के लिये ब्रह्मांड आदि के डगमगाने का मिथ्या कथन किया गया।

(३) जा दिन चढ़त दल साजि अवधूतसिंह
ता दिन दिगंत लौं दुवन दाटियतु हैं।
प्रलै के से धारा-धर धमक नगारा, धूरि
धारा ते समुद्रन की धारा पाटियतु है
भूखन भनत, भुव-गोल कोल हहरत
कहरत दिग्गज, मगज फाटियतु है
कीच से कचरि जात सेस के असेस फन
कमठ की पीठ पै पिठी सी बाँटियतु है

यहाँ राजा अवधूतसिंह की धाक की अत्यन्त प्रशंसा के लिये मिथ्यात्वपूर्ण कथन किये गये हैं।

२ सुन्दरता

(१) वाहि लखे लोयन लगै कौन जुवति की जोति
जाके तन की छाँह ढिग जोन्ह छाँह-सी होति

जलचर जरे औ सेवार जरि छार भये,
जल जरि गयो, पंक सूख्यो भूमि दरकी

विरहिणी का विरह-ताप इतना तेज था कि उसको छूकर वायु मानसरोवर पहुँचा तो उस तप्त वायु के लगने से जलचर जल गये, सिवार जलकर राख हो गया, जल उड़ गया, कीचड़ सूख गया और पृथ्वी फट गई। विरह-ताप इतना तेज नहीं हो सकता पर विरह का अतिशय वर्णन करने के लिये यह मिथ्या कथन किया गया।

५ प्रेम

कागद पै लिखत न बनत, मुख पै कह्यो न जात
कहिहै सब तेरो हियो, मेरे हिय की बात

६ कीर्ति

राजन तव कीरति-कथा हापै कही न जाय
चहुँ उई तिहुँ लोक महँ, कहुँ समाति नाय

राजा के याचक राजा से इतना दान पाते हैं कि वे सुवर्ण-गिरि मेरु और धनाधीश कुबेर को भी अपने सामने कुछ नहीं समझते फिर पारस, चिंतामणि और पद्म की तो उनके गिनती ही कहां ? यह उदारता की अत्यन्त प्रशंसा है।

४ विरह

(१) 'संकर' नदी नद नदीसन के नीरन की
भाप बन अंबर तें ऊँची चढ़ि जाइगी
दोनों ध्रुव-छोरन लौं पल में पिघलकर
घूम-घूम धरनी धुरी-सी बढ़ि जाइगी
झरैंगे अँगारे ये तरनि तारे, तारापति
जारैंगे, ख-मंडल में आग मढ़ि जाइगी
काहू विधि विधि की बनावट बचैगी नाहिं
जौ पै वा वियोगिनी की आह कढ़ि जाइगी

यहाँ भी विरह-ताप का अत्युक्तिपूर्ण वर्णन है कि यदि विरहिणी के मुँह से एक आह भी निकल जायगी तो उसके ताप से आकाशमंडल में अग्निकांड मच जायगा, पृथ्वी पिघल जायगी और ब्रह्मा की सारी सृष्टि ही जल जायगी।

(२) परसि वियोगिनी को पौन गयो मानसर
लागत ही औरै गति भई मानसर की।

अभ्यासार्थ प्रश्न

(१)

१. शब्दालंकार और अर्थालंकार में क्या अन्तर है? उदाहरण देकर स्पष्ट करो।

२ लाटानुप्रास, यमक और वीप्सा का अन्तर उदाहरण देकर समझाओ।

३ अनुप्रास किसको कहते हैं? अपनी पुस्तक में चार उदाहरण दो।

४ एक शब्द बार बार आवे तो कौन-सा अलंकार होगा?

५. एक शब्द के अनेक अर्थ हों तो उस अवस्था में कौन-सा अलंकार होगा?

६ यमक और श्लेष का अन्तर स्पष्ट करो।

७ काकु किसको कहते हैं? काकु वक्रोक्ति अलंकार कहां होता है?

८ पुनरुक्तवदाभास और श्लेष में क्या अन्तर है?

९ इन अवस्थाओं में कौन-से अलंकार होंगे—

(१) जब एक वर्ण बार बार आवे

(२) जब कोई शब्द एक ही अर्थ में दो बार आवे

(४)

१. निम्नलिखित पद्यों में जो जो अलंकार हों उनको बतला...

(१) देख कर उस काल उनको जान पड़ता था
मूर्त्तिमान महत्त्व से मंडित हुई मानो मही

(२) उसको निहार छवि ने भी हार मान ली है
कमनीय कञ्ज-कलियाँ हैं कुम्हलाई-सी ॥
क्षण क्षण ज्योति क्षण-ज्योति की विलीन होती
मानो उसे देख छिपती है शरमाई-सी ॥
आँखें सदा दौड़ दौड़ जाती हैं उसी के पास
उसके सुरूप-सुधा-सिन्धु में समाई-सी ॥
शरद जुन्हाई मनभाई है अवश्य किन्तु
पाई है लुनाई नहीं उसकी लुनाई-सी ॥

(३) पछतावे की परछाई-सी तुम भू पर छाई हो कौन
दुर्बलता, अँगड़ाई ऐसी अपराधी-सी भय से मौन।
हाँ सखि, आओ, बाँह खोल हम लग कर गले, जुड़ा लें प्राण।
फिर तुम तम में मैं प्रियतम में हो जावें द्रुत अन्तर्धान ॥

(४) रत्नाभरण भरे अंगों में ऐसे सुन्दर लगते थे।
ज्यों प्रफुल्ल वल्ली पर सौ-सौ जुगनू जगमग जगते थे ॥

(३)

१. इन अवस्थाओं में कौन-से अलंकार होंगे—

(१) जब उपमेय, उपमान और साधारण धर्म बतलाया गया हो पर वाचक शब्द न बताया गया हो

(२) जब साधारण धर्म बहुत-से हों

(३) जब कारण के पहले कार्य हो जाय

(४) जब बिना कारण कार्य हो जाय

(५) जब सामान्य कथन का विशेष कथन से समर्थन किया जाय

(६) जब केवल उपमान का कथन हो

(७) जब उपमेय को उपमेय के ही तुल्य बताया जाय

(८) जब असत्य बात का निषेध करके सत्य बात बता दी जाय

(९) जब अहेतु को हेतु मान लिया जाय

(१०) जब अत्यंत प्रशंसा के लिये मिथ्यात्वपूर्ण बात कही जाय।

२. उपमा, उत्प्रेक्षा, सन्देह और अपहुति के वाचक शब्द बतलाओ।

३ उपमेय और उपमान में क्या अन्तर होता है ?

४. साधारण धर्म किसको कहते हैं ?

५ अतिशयोक्ति के भेद बताओ और प्रत्येक का एक एक उदाहरण दो।

(२९) उड़ने लगी सब ओर रज होने लगी कंपित धरा।
मानो न सह कर भार वह ऊपर चली करके त्वरा॥

(३०) पापी मनुज भी आज मुँह से राम-नाम निकालते!
देखो, भयंकर भेड़िये भी आज आँसू डालते!

(३१) वह शर इधर गांडीव-गुण से भिन्न जैसे ही हुआ।
धड़ से जयद्रथ का उधर सिर छिन्न वैसे ही हुआ॥

(३२) बल-विभव में कुरु-राज सचमुच दूसरा सुर-राज है।

(३३) राजा युधिष्ठिर हर्ष से सहसा न कुछ भी कह सके!
थे भक्ति के गुरु भार से मानो वचन उनके थके॥

(३४) रानी दासी बनी बनी यह दासी अब महारानी थी।

(३५) रानी रोईं रनिवासों में, बेगम गम से थीं बेजार॥

(३६) थी परदे की इज्जत परदेशी के हाथ बिकानी थी।

(३७) रानी गई सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी।
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी॥

(३८) यहाँ कोकिला नहीं, काक हैं शोर मचाते।
काले-काले कीट भ्रमर का भ्रम उपजाते॥

(३९) विमल व्योम में देव दिवाकर अग्नि-चक्र से फिरते हैं।
किरण नहीं, ये पावक के कण जगती-तल पर गिरते हैं।

(४०) निर्वासित थे राम, राज्य था कानन मे भी।
सच ही हैं श्रीमान्, भोगते सुख वन मे भी॥
चंद्रातप था व्योम, तारका रत्न जड़े थे।
स्वच्छ दीप था सोम, प्रजा तप-पुंज खड़े थे॥
शान्त नदी का स्रोत बिछा था अति सुखकारी।
कमल-कली का नृत्य हो रहा था मनहारी॥

(४१) राघव बोले देख जानकी के आनन को—
'स्वर्गंगा का कमल मिला कैसे कानन को?'
नील मधुप को देख वहाँ उस कंज-कली ने
स्वयं आगमन किया,—कहा यह जनक-लली ने॥

(४२) हर घडी, हर अवसरो पर, हर जगह,
हर-गुनों का गान हो है हो रहा॥

(४३) गुन सको गुन लो, सुनो जो सुन सको
है किसी गुनमान का गुन गा रहा॥

(४४) जब दयावान बन न दया दिखा
तब दया का गान क्या [illegible]

(४५) दिल किसी का दुख रहा है जो दुख
दिल वही है पा रहा दिल जो [illegible]

(४६) लोचन लुभाते हुए लोल छंत-डोल पर
फूल रहे फूलकर फूल उपवन में।

(४७) शरद-जुन्हाई-सी है गात की गोराई चारु;
आनन अनूप मानो फुल्ल जलजात है॥

(४८) कोउ कहै नर-नारायन, हरि-हर कोउ।
कोउ कहै विहरत न मधु-मनसिज दोउ॥

(४९) जितने कष्ट कंटकों में है जिनका जीवन-सुमन खिला।
गौरव-गन्ध उन्हें उतना ही अत्र तत्र सर्वत्र मिला॥

(५०) इसी समय पौ फटी पूर्व में पलटा प्रकृति-पटी का रंग।
किरण-कंटकों से श्यामांबर फटा, दिवा के दमके अंग॥

(अध्यापक अन्यान्य पद्य अपनी ओर से देकर छात्रों से अभ्यास करवावें)

(३)

निम्नलिखित अंशों के अलंकार निकाल कर उसको सीधी-सादी भाषा में लिखो—

(क) जहाँ नगर पर आनन्द की घटा छाई रहती आज वहीं आपत्ति के काल-मेघ घिर आये हैं।

(ख) तीन दिन पूरे हुए, विपत्ति-मेघ जनता पर खड्ग की बिजली गिराने लगे।

(ग) सायंकाल अस्ताचल की छाती पर पतित मूर्च्छित दिनमणि कैसा निर्जीव रहता है। उस पार, क्षितिज के चरणों के निकट समुद्र की हाहामयी तरंगों के पास, पतित सूर्य्य की रक्त चिता जलती है। माथे पर सायंकाल-रूपी काला चाण्डाल खड़ा रहता है। प्राची की अभागिनी बहिन पश्चिमा 'आग' देती है। दिशाये व्यथित रहती हैं—खून के आँसू बहाती हैं। प्रकृति में भयानक गंभीरता भरी रहती है। पतित सूर्य की चिता की लाली से अनन्त ओतप्रोत रहता है।

(घ) हमारा यह कविता-कामिनीकान्त सूर होकर भी ज्योति-विकीर्ण-कारी उज्ज्वल नेत्र रखता है। वह भाव राज्य का चक्रवर्ती सम्राट् है, प्रतिभा-कुलवधू का शृंगार है, नवरस—मधुमास का वसन्त-समीर है, उक्ति-आलापिनी का मधुर निनाद है, व्यञ्जना-अमरावती का पुरन्दर है, अलङ्कार-विश्वचमन का लावण्य है और सरसता-सौभाग्यवती-सीमन्त का सिन्दूर है। उसका सूरसागर भाव का सुमेरु, मधुरता का मन्दिर, शान्त कवितावली का निकेतन, वाणी विलास का विलास-भवन और वर्णना का विचित्र क्रीडा स्थल है

(ङ) मैंने इस निश्चल निश्चय से झट से हृदय किया हलका
ऊपर देखा-अरुण राग से रंजित भाल नभस्थल का ॥

(च) राघव बोले देख जानकी के आनन को—
'स्वर्गंगा का कमल मिला कैसे कानन को'

'नील मधुप को देख वहीं उस कंजकली ने
स्वयं आगमन किया'—कहा यह जनकलली ने ॥

(छ) प्रियंवदा के विना आज यह लगता है घर महा भयंकर।
द्वार नहीं हैं ये अति भीषण मुँह खोले हैं खड़े निशाचर ॥

(ज) पत्ते-सा उड़ जाय तुम्हारे वायुवेग में पड़ वह पामर।

(७)

(१) वर्षाॠतु या प्रभातकाल पर एक छोटा-सा निबन्ध आलंकारिक भाषा मे लिखो।

(२) युद्ध का समुद्र के साथ रूपक बाँधो।

(३) जन्मभूमि (भारत) का रूपक जननी के साथ बाँधो।

(४) निम्नलिखित सामान्य कथनों का समर्थन विशेष कथनों से करो—

(क) ले डूबता है एक पापी नाव को मँझधार में।

(ख) टेढ़ जानि सका सब काहू।

(५) समुद्र की व्याजनिन्दा करो।

———

अलंकार	भेद	लक्षण	उदाहरण
लाटानुप्रास			(२) पूत कपूत तो क्यों धन सचै, पूत सपूत तो क्यों धन सचै।
वीप्सा		शब्द की आवृत्ति एक ही अर्थ मे और अन्वय प्रत्येक बार एक ही हो।	(१) गाव गांव अस होइ अनंदा (२) गुरुदेव जाता है समय रक्षा करो, रक्षा करो!
यमक		(१) शब्द की आवृत्ति भिन्न अर्थ मे (२) शब्दांश की आवृत्ति	(१) कदब के पुष्प कदब की छटा (२) विदारता था तरु कोविदार का
श्लेष		अनेक अर्थ देनेवाले शब्दों का प्रयोग	पानी गये न ऊबरे मोती मानुप चून
वक्रोक्ति		एक अर्थ से कहे हुए शब्द या शब्दो का अन्य अर्थ लेना।	
	श्लेष व०	जब शब्द के अनेक अर्थ होते हों	को तुम, हरि हों, हा नहीं वानर को कछु काम

(२) अर्थालंकार

अलंकार का नाम	भेद	उपभेद	वाचक शब्द	लक्षण	उदाहरण
उपमा			सा, समान, सम सदृश, सरिस, तुल्य इव, यथा, जैसे, जैसा, ऐसा, ज्यों, यों, जिमि, तिमि, इमि	किसी वस्तु की किसी अन्य वस्तु के साथ समानता बताना।	मुख चन्द्रमा के समान सुन्दर है
	पूर्णोपमा			जब उपमेय, उपमान, वाचक-शब्द और साधारण धर्म चारों शब्दों में प्रकट हों।	मुख चन्द्रमा के समान सुन्दर है
	लुप्तोपमा			जब इनमें से कोई एक या दो या तीन लुप्त हों।	
	धर्मलुप्ता			जब धर्म लुप्त हो	मुख चन्द्रमा के समान है
	वाचक-लुप्ता			जब वाचक शब्द लुप्त हो	मुख चन्द्र सुन्दर है
	धर्म-वाचक लुप्ता			जब धर्म व वाचक शब्द दोनों लुप्त हों।	चन्द्र-मुख।

अलंकार का नाम	भेद	उपभेद	वाचक शब्द	लक्षण	उदाहरण
उपमा	समुच्चयोपमा		(उपमा की भाँति)	जब धर्म बहुत से हों पर उपमान एक ही हो।	मुख चन्द्र के समान सुन्दर व कान्तिमान् है।
	मालोपमा		(उपमा की भाँति)	जब उपमान बहुत-से हों	
		एकधर्मा		जब धर्म एक ही हो	मुख चन्द्र और कमल के समान सुन्दर है
		भिन्नधर्मा		जब प्रत्येक उपमान का भिन्न भिन्न धर्म हो	मुख चन्द्र के समान सुन्दर और कमल के समान कोमल है
उपमेयोपमा			(उपमा की भाँति)	पहले उपमेय को उपमान के समान बतला कर फिर उपमान को उपमेय के समान बतलाना।	मुख चन्द्र के समान सुन्दर है और चन्द्र मुख के समान सुन्दर है
अनन्वय			(उपमा की भाँति)	जब उपमेय को उपमेय के ही समान बताया जाय	मुख मुख ही के समान सुन्दर है

अलंकार का नाम	भेद	उपभेद	वाचक शब्द	लक्षण	उदाहरण
प्रतीप			(उपमा की भांति)		
	प्रथम			जब उपमान को उपमेय के समान बताया जाय	चन्द्र मुख के समान सुन्दर है
	द्वितीय			जब उपमान से उपमेय का अनादर कराया जाय	हे मुख, क्या गर्व करता है आकाश में चन्द्र तेरे ही समान है
	तृतीय			जब उपमेय से उपमान का अनादर कराया जाय	हे चद्र क्या गर्व करता है, राधा का मुख तेरे ही समान है
	चतुर्थ			जब उपमान की उपमा उपमेय से देकर फिर उस उपमान को ठीक न बताया जाय	चद्र मुख के समान नहीं हो सकता

अलंकार का नाम	भेद	उपभेद	वाचक शब्द	लक्षण	उदाहरण
प्रतीप	पंचम		व्यर्थ है इत्यादि	उपमेय उपमान का कार्य कर सकता है इसलिये उपमान को व्यर्थ कहा जाय	जब मुख ही प्रकाश कर देता है तो चन्द्र व्यर्थ है।
रूपक				उपमेय में उपमान का आरोप किया जाय। उपमेय उपमान को एक बताया जाय।	
	अभेद			उपमेय को उपमान बताया जाय और दोनों में कोई भेद न रखा जाय।	

अलंकार का नाम	भेद	उपभेद	वाचक शब्द	लक्षण	उदाहरण
रूपक		सम		दोनों में कोई कमीबेशी न हो	मुख चंद्र है
		अधिक		उपमेय में अधिकता हो	मुख स्वच्छ (निष्कलंक) चंद्र है
		न्यून		उपमेय में न्यूनता हो	मुख केवल पृथ्वी पर चमकनेवाला चंद्र है
रूपक	तद्रूप		दूसरा, अन्य और अपर इत्यादि	उपमेय को उपमान बताया जाय और दोनों में कोई भेद न रखा जाय	
		सम		जब दोनों में कोई कमीबेशी न हो	मुख दूसरा चंद्रमा है
		अधिक		जब उपमेय में अधिकता हो	मुख दूसरा निष्कलंक चंद्र है

अलंकार का नाम	भेद	उपभेद	वाचक शब्द	लक्षण	उदाहरण
	…ग्य)			जब वाचक शब्द लुप्त हो	
…ख				एक वस्तु का अनेक प्रकार से वर्णन	
				एक वस्तु को अनेक व्यक्ति अनेक प्रकार से देखें, सुनें या वर्णन करें	जाचक सुरतरु, तिय मदन, अरि देखें ज्यों काल।
				एक वस्तु को एक व्यक्ति अनेक प्रकार से वर्णन करे	श्रीकृष्ण का मुख भक्तों के हृदयों को खिलानेवाला है और दुष्टों को कमलों की तरह मुरझा देनेवाला है

अलंकार का नाम	भेद	उपभेद	वाचक शब्द	लक्षण	उदाहरण
स्मरण				पहले देखी या सुनी हुई वस्तु का स्मरण वैसी या तत्सबधी वस्तु देख कर हो	पूरब दिसि ससि उगेउ सुहावा। सियमुख-सरिस देख सुख पावा ॥
भ्रांतिमान				गलती से उपमान को उपमेय समझ लेना	यह (मुख) चद्र है
सन्देह			या, किधौं, कैधौं, कि, की, क्या इत्यादि।	उपमेय में कई वस्तुओं के होने का सदेह हो	यह मुख है या चद्र या कमल
अपह्नुति			नहीं, व्याज इत्यादि	एक बात का निषेध करके अन्य बात की स्थापना की जाय	यह मुख नहीं चद्र है

अलंकार का नाम	भेद	उपभेद	वाचक शब्द	लक्षण	उदाहरण
अपह्नुति	शुद्ध		नहीं, न	सत्य बात का निषेध असत्य की स्थापना	यह मुख नहीं चन्द्र है
	हेतु		"	सत्य का निषेध असत्य की स्थापना और इसका हेतु बताना	यह मुख नहीं चन्द्र है क्योंकि (प्रेमियों-रूपी) कमलों को जलाता है
	पर्यस्त		"	किसी वस्तु के धर्म का उस वस्तु में निषेध करके अन्य वस्तु में बतलाना	मुख मुख नहीं है चन्द्र ही मुख है
	‹ ‹		व्याज, बहाने से, मिस से इत्यादि	सत्य बात का निषेध करके चतुराई से असत्य बात बना देना	अर्धरात यह ज्यों सुमौन। सुंदरता बरनै कहि कौन। देखत ही मन भयो अनंद। क्यों सखि पियमुख, ना सखि चंद

अलंकार का नाम	भेद	उपभेद	वाचक शब्द	लक्षण	उदाहरण
अपह्नुति	कैतव		(नहीं, न)	मिस आदि शब्दों से सत्य का निषेध, असत्य का स्थापन	मुख के बहाने चंद्र उदय हुआ
	भ्रांत			असत्य का निषेध कर सत्य बात बताना	यह चंद्र नहीं मुख है
अतिशयोक्ति					
	संबंधा			असंबंध में संबंध अयोग्य में योग्यता	मुख चंद्र से बहुत बढ़कर है
	असंबंधा			संबंध में असंबंध योग्य में अयोग्यता	मुख के सामने चन्द्र कुछ नहीं

अलकार का नाम	भेद	उपभेद	वाचक शब्द	लक्षण	उदाहरण
अतिशयोक्ति	रूपका			उपमेय का लोप करके केवल उपमान का कथन करना और उपमान के कथन में ही उपमेय का ज्ञान कराना	चन्द्रमा में दो मछलियाँ खेलती हैं। (मुख में दो चचल नेत्र हैं।)
दृष्टान्त				कोई बात कह कर उससे मिलती-जुलती दूसरी बात कहना। विशेष का समर्थन विशेष से (या कभी २ सामान्य का समर्थन सामान्य से)	सहृदय जन ही काव्य का लेते हैं आनद। पीते हैं अलिवृन्द ही अमल कमल-मकरद।

अलंकार	वाचक शब्द	लक्षण	उदाहरण
[illegible]		उपमेय को उपमान से बढ़कर बताना	
[illegible]		उपमेय में कोई विशेषता बताना	मुख सुन्दर है चन्द्र-सा मधुर वचन सविशेष
[illegible]		उपमान में कोई हीनता बताना	मुख समता क्यों करि सकै चन्द्र कलङ्कित हीन
[illegible]		निन्दा के बहाने स्तुति की जाय	शत्रु सरिस पतितनि करै तू अविवेकिनि गंग
[illegible]		स्तुति के बहाने निन्दा की जाय	राम साधु तुम साधु सुजाना

अलकार का नाम	भेद	उपभेद	वाचक शब्द	लक्षण	उदाहरण
विभावना				कारण के सबध में विलक्षण कल्पना करना	
	प्रथम			बिना कारण कार्य होना	बिनु पद चलै सुनै बिनु काना
	द्वितीय			अपर्याप्त कारण से कार्य होना	सहस सवार जिते शिवा, लेकर सौ असवार
	तृतीय			बाधा होने पर भी कार्य हो जाना	तेज छत्रधारीन हू, असहन ताप करत
	चतुर्थ			जो कारण न हो उस कारण से कार्य का होना	वीणानाद सु शरन सों होत सुनो दे कान

अलंकार का नाम	भेद	उपभेद	वाचक शब्द	लक्षण	उदाहरण
विभावना	प्रथम			विरुद्ध कारण से कार्य होना	सखी करत संताप मोहि सीतल किरन मयंक
	षष्ठ			कार्य से कारण का होना	नयन-मीन तें प्रगट भइ देखहु सरिता-धार
विशेषोक्ति				कारण होने पर भी कार्य का होना	नीर भरे नितप्रति रहैं तऊ न प्यास बुझाइ
अर्थान्तर न्यास				सामान्य का विशेष से और विशेष का सामान्य से समर्थन	
	प्रथम			कोई सामान्य बात कह कर उसके समर्थन के लिए विशेष बात कहना	टेढ़ जानि सका सब काहू वक्र चन्द्रमहि ग्रसै न राहू

अलंकार का नाम	भेद	उपभेद	वाचक शब्द	लक्षण	उदाहरण
अर्थान्तर-न्यास	द्वितीय			कोई विशेष बात कह कर उसके समर्थन के लिए सामान्य बात कहना	रघुवर-बल पत्थर तरे करै कहा न महान ?
अत्युक्ति				अत्यंत प्रशंसा के लिए मिथ्यात्वपूर्ण कथन करना	जाचक तेरे दान ते भये कल्पतरु, भूप

परिशिष्ट (ख)

(१) हिन्दी के मुख्य-मुख्य छन्द

छन्द दो प्रकार के होते हैं—(१) मात्रिक और (२) वर्णिक। मात्रिक छन्द का हिसाब मात्राओं से होता है और वर्णिक छन्द का वर्णों से, अर्थात् पहले में मात्राओं की संख्या निश्चित होती है और पिछले में वर्णों की। चौपाई मात्रिक छन्द है, उसके प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ होती हैं, वर्ण चाहे जितने हों। मालिनी वर्णिक छन्द है, उसके प्रत्येक चरण में १५ वर्ण रहते हैं और यह भी निश्चित रहता है कि कौन-सा वर्ण ह्रस्व या दीर्घ होगा (इस प्रकार उसके प्रत्येक चरण में मात्राओं की संख्या भी निश्चित रहती है)। मनहरण कवित्त ऐसा वर्णिक छंद है, जिसमें केवल वर्णों की संख्या निश्चित होती है, मात्राएँ चाहे जितनी हों।

छंद में प्राय चार चरण होते हैं। छप्पय और कुण्डलिया में [illegible] छः चरण होते हैं। यदि चारों चरणों में मात्राओं या वर्णों की [illegible]ख्या बराबर हो तो सम छंद होता है, जैसे चौपाई और मालिनी। [illegible] पहले और तीसरे चरण की मात्राएँ या वर्ण बराबर हों और [illegible] और चौथे चरण की मात्राएँ या वर्ण बराबर हों तो अर्धसम [illegible] होता है जैसे दोहा [illegible] जो छन्द सम या अर्धसम नहीं होते वे [illegible] कहे जाते हैं। वर्णिक छन्द के [illegible] प्रकार के होते हैं—[illegible]

छन्दों में वर्णों की संख्या निश्चित रहती है और साथ ही यह भी निश्चित रहता है कि कौन-सा वर्ण ह्रस्व या दीर्घ होगा, वे साधारण वर्णिक छन्द होते हैं और जिन छन्दों में केवल वर्णों की संख्या ही नियत रहती है, ह्रस्व-दीर्घ का नियम नहीं होता, वे मुक्तक कहलाते हैं।

A लघु-गुरु

वर्ण दो प्रकार के होते हैं—(१) ह्रस्व और (२) दीर्घ। छन्द-शास्त्र में इनको क्रमशः लघु और गुरु कहते हैं। इनके संक्षिप्त नाम 'ल' और 'ग' हैं, एवं इनके चिह्न इस प्रकार हैं—

लघु का चिह्न है एक खड़ी पाई, जैसे (।)
गुरु का चिह्न है एक वक्र रेखा, जैसे (ऽ)

लघु वर्ण को एक मात्रा होती है और गुरु वर्ण की दो मात्राएँ। छन्द-शास्त्र में दो से अधिक मात्रा किसी वर्ण की नहीं होती। मात्रा स्वरों की होती है, व्यंजनों की नहीं। मात्राएँ गिनने में व्यञ्जन पर ध्यान नहीं दिया जाता।

लघु वर्ण—अ इ उ ऋ और इनकी मात्रावाले व्यञ्जन।

गुरु वर्ण—(१) आ ई ऊ ॠ
" ए ऐ ओ औ और इनकी मात्रावाले व्यञ्जन।*

---

*१—सवैया इत्यादि छन्दों में आवश्यकतानुसार गुरु को भी लघु पढ़ना पड़ता है।

(२) अनुस्वार और विसर्गवाले वर्ण, जैसे—

अं, कं, दिं, दुं, कः आदि।

(३) संयुक्त वर्ण से पूर्व का वर्ण, जैसे—

'सत्य' में स, और

'वर्ण' में व।

इस नियम का अपवाद भी देखा जाता है, जैसे—

तुम्हारा में तु लघु एवं एकमात्रिक है, क्योंकि पढते समय तु पर जोर नहीं पडता।

(४) छंद के चरण के अंत में, आवश्यकता हो तो, लघु वर्ण गुरु मान लिया जाता है। जैसे—

जब मिला फिर भी नहिं उत्तर

यहाँ 'उत्तर' का र छंद के नियमानुसार गुरु होना चाहिए, पर है लघु। ऐसे वर्ण को लघु होने पर भी गुरु समझ लिया जाता है।

(५) हलंत व्यञ्जन के पूर्व का वर्ण, जैसे सरित् में रि| हलंत व्यञ्जन की अपनी कोई मात्रा नहीं होती।

२—हिन्दी में ह्रस्व ए और ओ भी होते हैं, जैसे—

(१) अब मोहि भा भरोस हनुमन्ता।

इसमें मो ह्रस्व है और उसकी एक मात्रा है।

(२) एक सुवन मिला है जो मुझे यत्न द्वारा।

इसमें एक का ए ह्रस्व है।

नोट—वर्ण के ऊपर चद्रबिन्दु (ँ) लगने से उसकी मात्रा में कोई फर्क नहीं पडता। जैसे—

'हँसना' मे हँ लघु है,
'साँच' मे साँ गुरु है,
'नहिं, मे हिं लघु है,
'ऊँचा' में ऊँ गुरु है।

गण

वर्णिक छंदो मे गणों का प्रयोग होता है। प्रत्येक गण तीन वर्ण का होता है। कुल गण आठ हैं। उनके नाम, सक्षिप्त नाम, लक्षण, रूप और उदाहरण इस प्रकार हैं—

❀ (१) मगण	म	तीनो वर्ण गुरु	SSS	भाराता
(२) नगण	न	तीनो वर्ण लघु	।।।	भरत
(३) भगण	भ	पहला वर्ण गुरु	S ।।	भारत
(४) जगण	ज	बीच का वर्ण गुरु	।S।	भरात

* (१) आदि मध्य अरु अन्त मे अन्त मे भज-साके गुरु होय।
य-र-ताके लघु होत है, म गुरु, न लघु, सब कोय ॥

(२) यमाताराजभानसलगा

जो गण मालूम करना हो उसका आदि अक्षर निकाल लो और फिर उसके आगे के दो अक्षर और ले लो। इन तीन अक्षरों का जो रूप होगा, वही उस गण का रूप होगा। जैसे जगण मालूम करना हो तो ज और उसके आगे के दो अक्षर भी न लिये जभान हुआ, तो जगण का रूप । S । होगा।

(५) सगण स अंत का वर्ण गुरु ॥ऽ भरता
(६) यगण य पहला वर्ण लघु ।ऽऽ भराता
(७) रगण र बीच का वर्ण लघु ऽ।ऽ भारता
(८) तगण त अंत का वर्ण लघु ऽऽ। भारात

नोट—म. न. भ. ज. स. य. र. त. ग. ल ये पिंगल के दस वर्ण कहलाते हैं।

यति और गति

छन्द को पढ़ते समय बीच बीच में ठहरना पड़ता है। इस ठहरने को यति और ऐसे स्थानों को यति का स्थान कहते हैं। जैसे—

प्रियपति वह मेरा, प्राणप्यारा कहाँ है।

यहाँ मेरा के बाद कुछ ठहरना पड़ता है, अत यहाँ यति है। चरण के अन्त में यति हमेशा होती है, परन्तु बीच में यति बड़े बड़े छंदों में ही होती है। मंदाक्रांता आदि छंदो के बीच में दो-दो यति तक होती है। छंद में किसी शब्द को इस तरह नहीं रखना चाहिए कि यति उसके बीच में पड़े। यह यतिभङ्ग दोष माना जाता है पर रोला आदि मात्रिक छंदों में कभी-कभी इसका ध्यान नहीं रक्खा जाता।

छन्द के पढ़ने की लय को गति कहते हैं। मात्राएं ठीक होने पर भी बिना गति के छन्द नहीं बन सकता। जैसे—

राम जबते ब्याहि घर आये।

यह पंक्ति १६ मात्रा की है पर चौपाई की भांति पढ़ी नहीं जा सकती, अत इसमें गति नहीं है और यह चौपाई भी नहीं है।

(१) मात्रिक सम

नाम	प्रत्येक चरण मे मात्राये	यति कितनी मात्रा पर	विशेप नियम	उदाहरण
१ चौपई	१५	१५	अंत में ऽ। हो	सेवा समय दैव वन दीन मोर मनोरथ सुफल न कीन
२ चौपाई	१६	१६	अंत में ऽ। न हो	सेवा समय दैव वन दीना मोर मनोरथ सुफल न कीना
३ शृंगार	१६	१६	अंत में ऽ। हो	निछावर कर दें हम सर्वस्व हमारा प्यारा भारतवर्ष
४ रोला	२४	११। १३		नव उज्ज्वल जल धार हार हीरक सी सोहति
५ दिग्पाल	२४	१२। १२	अंत मे ऽ। हो	सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोसतॉ हमारा
६ रूपमाला	२४	१४। १०	अंत में ।ऽ या ।।। हो	उत्तरा के धन रहो तुम उत्तरा के पास
७ गीतिका	२६	१४। १२		उत्तरा के धन रहो तुम उत्तरा के पास हो

नाम	प्रत्येक चरण में मात्रायें	यति कितनी मात्रा पर	विशेष नियम	उदाहरण
८ सरसी	२७	१६ । ११	अंत में ऽ । हो	नीरव तारागण करते थे झिलमिल अल्प प्रकाश है उत्तरा के धन रहो तुम उत्तरा के पास ही
९ हरिगीतिका	२८	१६ । १२	अंत में ऽ । या ।।। हो	
१० सार	२८	१६ । १२		सबको मैंने कहते पाया तेरी रामकहानी
११ लावनी	३०	१६ । १४		शोक-भरे छंदों में मुझसे कहो न जीवन सपना है
१२ वीर	३१	१६ । १५		जैसे जीर्ण वस्त्र को तज कर नर नूतन पट लेता धार

(२) मात्रिक अर्धसम

नाम	विषम (१।३) चरण में मात्रायें	सम (२।४) चरण में मात्रायें	विशेष	उदाहरण
१३ वरवै	१२	७		तुलसी राम नाम सम मीत न आन जो पहुँचाव राम पुर तनु अवसान।
१४ दोहा	१३	११		कागा काको धन हरै कोयल काको देय मीठे वचन सुनाय कर जग अपनो कर लेय।
१५ सोरठा	११	१३	दोहे का उलटा	आसी सावण मास, वरखा रुत आसी भले साईनारो साथ भले न आसी वींजरा।
१६ उल्लाला	१५	१३		हे शरणदायिनी देवि तू करती सबका त्राण है हे मातृभूमि सन्तान हम तू जननी तू प्राण है।

(२) विषम मात्रिक

नाम	लक्षण	विशेष	उदाहरण
१७ कुंडलिया	दोहा + रोला	दोहे का अंतिम चरण रोला आदि में रखा जाता है।	कोई संगी उत नहीं है इतही को संग पथी लेहु मिलि ताहि तें सबसों सहित-उमंग सबसों सहित उमंग बैठि तरनी के मांहीं नदिया नाव सँयोग फेरि मिलिहैं यह नाहीं बरनै दीनदयाल पार पुनि भेंट न होई अपनी अपनी गैल पथी जैहैं सब कोई
१८ छप्पय	रोला + उल्लाला		नीलांबर परिधान हरित पट पर सुंदर है सूर्य चन्द्र युग मुकुट मेखला रत्नाकर है नदियाँ प्रेम प्रवाह फूल तारामंडल है बंदी विविध विहंग शेषफण सिंहासन है हे शरणदायिनी देवि तू करती सबका त्राण है हे मातृभूमि संतान हम तू जननी तू प्राण है

(४) वर्णिक सम

नाम	वर्णसंख्या	गण	रूप	यति कौन से वर्ण पर	उदाहरण
१ इन्द्रवज्रा	११	त त ज ग ग	SSISSIISISS	११	संसार है एक अरण्य भारी
२ उपेन्द्र-वज्रा	११	ज त ज ग ग	ISISSIISISS	११	हुए जहाँ हैं हम मार्गचारी
३ उपजाति	११	त/ज त ज ग ग	I(या S)SISSIISSS	११	(इन्द्रवज्रा-उपेन्द्रवज्रा का मिश्रण)
४ वंशस्थ	१२	ज त ज र	ISISSIISISIS	१२	लसी कहीं थी सरसा सरोजिनी कुमोदिनी मानस मोदिनी कहीं,
५ तोटक	१२	स स स स	IISIISIISIIS	१२	नर हो न निराश करो मन को
६ द्रुतवि-लंबित	१२	न भ भ र	IIISIISIISIS	१२	पुरुष हो पुरुषार्थ करो उठो

नाम	वर्णसंख्या	गण	रूप	यति कौन से वर्ण पर	उदाहरण
७ वसंततिलका	१४	त भ ज ज ग ग	SSISIIISIISISS	१४	कुंजें वही थल वही, यमुना वही है, वेलें वही वन वही विटपी वही हैं,
८ मालिनी	१५	न न म य य	IIIIIISSSISSISS	८।	प्रियपति वह मेरा, प्राणप्यारा कहाँ है दुख जलनिधि डूबी, का सहारा कहाँ है
९ मंदाक्रान्ता	१७	म भ न त त ग ग	SSSS,IIIIIS, SISSISS	४।६।७	आशा तेरी, अमित महिमा, धन्य तू देवि आशे। तू छू के है, मृतक बनती, प्राणियों को जिलाती॥
१० शिखरिणी	१७	य म न स भ ल ग	ISSSSS,IIIIISSIIIS	६।११	अनूठी आभा से, सरस सुखमा से सरसे।

(४) वर्णिक सम

नाम	वर्णसंख्या	गण	रूप	यति कौन से वर्ण पर	उदाहरण
१ इन्द्रवज्रा	११	त त ज ग ग	SSISSIISISS	११	संसार है एक अरण्य भारी
२ उपेन्द्र-वज्रा	११	ज त ज ग ग	ISISSIISISS	११	हुए जहाँ हैं हम मार्गचारी
३ उपजाति	११	त/ज त ज ग ग	I(याS)SISSIISSS	११	(इन्द्रवज्रा-उपेन्द्रवज्रा का मिश्रण)
४ वंशस्थ	१२	ज त ज र	ISISSIISISIS	१२	लसी कहीं थी सरसा सरोजिनी कुमोदिनी मानस मोदिनी कहीं,
५ तोटक	१२	स स स स	IISIISIISIIS	१२	नर हो न निराश करो मन को
६ द्रुतवि-लंबित	१२	न भ भ र	IIISIISIISIS	१२	पुरुष हो पुरुषार्थ करो उठो

नाम	वर्णसंख्या	गण	रूप	यति कौन से वर्ण पर	उदाहरण
७ वसन्ततिलका	१४	न भ ज ज ग ग	SSISIIISIISISS	१४	कुजें वही थल वही, यमुना वही है, वेलें वही वन वही विटपी वही हैं,
८ मालिनी	१५	न न म य य	IIIIIISSISISSISS	८।	प्रियपति वह मेरा, प्राणप्यारा कहाँ है दुख जलनिधि डूबी, का सहारा कहाँ है
९ मन्दाक्रान्ता	१७	म भ न त त ग ग	SSSS,IIIIIS, SISSISS	४।६।७	आशा तेरी, अमित महिमा, धन्य तू देवि आशे। तू छू के है, मृतक बनते, प्राणियों को जिलाती॥
१० शिखरिणी	१७	य म न म भ ल ग	ISSSSS,IIIIISSIIIS	६।११	अनूठी आभा से, सरस सुखमा से सुरससे।

नाम	वर्णसंख्या	गण	रूप	यति कौन से वर्ण पर	उदाहरण
११ शार्दूल-विक्रीडित	१९	म स ज स त त ग	SSS||S|S|||S, SS|SS|S	१२|७	जाती प्रेम न जातिपाँति तुमसे, पूछी किसी की कहीं।
१२ मदिरा	२२	७ भगण + १ गुरु	S||S||S||S|| S||S||S||S		हो रहते तुम नाथ जहाँ रहता मन साथ सदैव वहाँ।
१३ मालती-सवैया (मत्तगयन्द)	२३	७ भगण + २ गुरु	S||S||S||S||S||S| |S||SS		हो रहते तुम नाथ जहाँ रहता मन साथ सदैव वहाँ है।
१४ सुमुखी	२३	७ जगण + लग	|S||S||S||S||S|| S||S||S		हो रहते तुम नाथ जहाँ रहता मन साथ सदैव वहाँ पर।
१५ किरीट सवैया	२४	८ भगण	S||S||S||S||S||S|| S||S||		

नाम	वर्ण-संख्या	गण	रूप	यति कौन से वर्ण पर	उदाहरण
१६ दुर्मिल सवैया	२४	८ सगण	IISIISIISIIS IISIISIIS		अवधेश के बालक चार सदा तुलसी मन-मंदिर में विहरैं।
१७ सुन्दरी	२५	८ सगण + १ गुरु	IISIISIIS IISIISIISS		अवधेश के बालक चार सदा तुलसी मन-मंदिर में विहरैंगे
१८ मनहरण	३१	गण का नियम नहीं	८।८।८।७ या १६।१५ पर यति		जान पड़ता है उन्हें आज भी कन्हैया यहाँ, मैया मैया टेरते हैं गैया को चराते हैं।
१९ रूप घनाक्षरी	३२	"	८।८।८।८ या १६ १६ पर यति × (अन्त्य वर्ण लघु)		×
२० देव घनाक्षरी	३३	"	८।८।८।९ पर यति		×

परिशिष्ट (ग)

रसों का संक्षिप्त परिचय

काव्य-पठन, श्रवण अथवा अभिनय-दर्शन से जो अलौकिक आनंद उत्पन्न होता है उसे रस कहते हैं। रस की उत्पत्ति काव्य में वर्णित मनो-विकार या भाव से होती है, जिसका अनुभव पाठक या श्रोता या दर्शक के हृदय में होता है। इस प्रकार रस के आधार भाव हैं। भाव दो प्रकार के होते हैं—(१) स्थायीभाव और (२) संचारीभाव। जो भाव मन मे बहुत देर तक रह कर उसे तन्मय कर देते हैं, और जो इस प्रकार रस बन जाते हैं, वे स्थायीभाव कहलाते हैं। जो भाव मन मे थोड़े समय तक उत्पन्न हो कर चले जाते हैं वे सचारीभाव कहलाते हैं। ये भाव स्थायीभाव की अनुभूति मे सहायक होते हैं।

इन दो प्रकार के भावों के अतिरिक्त रस की उत्पत्ति के लिए विभाव और अनुभाव की आवश्यकता होती है। रस की उत्पत्ति और उद्दीपन के कारणों को विभाव कहते हैं। इनके दो भेद होते हैं—

(१) आलंबन—जिसके कारण स्थायीभाव की उत्पत्ति होती है, जैसे शृंगार में प्रेमपात्र, करुण में मृत व्यक्ति, रौद्र में शत्रु इत्यादि।

(२) उद्दीपन—ऐसी परिस्थिति, जो उत्पन्न हुए स्थायीभाव को उद्दीप्त या तीव्र करे, जैसे शृंगार में, सुन्दर प्राकृतिक दृश्य, वसंत और संगीत; हास्य में हास्योत्पादक व्यक्ति की चेष्टायें; वीर में मारू बाजा, चारणों का बढ़ावा इत्यादि।

आन्तरिक मनोभाव को बाहर प्रकट करनेवाली शारीरिक चेष्टाओं को अनुभाव कहते हैं। जैसे मुख खिलना, भुजा फड़कना, काँपना, रुदन, आँखे लाल होना इत्यादि।

प्रत्येक रस का एक स्थायीभाव होता है। रस• और उनके स्थायीभाव नीचे लिखे जाते हैं—

	रस	स्थायीभाव
१	शृंगार	प्रेम
२	हास्य	हास
३	करुण	शोक
४	वीर	उत्साह
५	रौद्र	क्रोध
६	भयानक	भय
७	बीभत्स	घृणा
८	अद्भुत	विस्मय
९	शान्त	निर्वेद
१०	वात्सल्य	स्नेह

संचारीभाव ३३ माने गये हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं—

• शृंगार-हास्य-करुण-रौद्र-वीर-भयानकाः।
बीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः।

निर्वेद ग्लानि मद मोह विषाद शंका।
चापल्य गर्व जड़ता स्मृति मृत्यु व्याधि॥
उन्माद स्वप्न श्रम त्रास विबोध निद्रा।
आवेग दैन्य अवहित्थ वितर्क व्रीडा॥
आलस्य धैर्य मति उत्सुकता असूया।
चिंता तथा अपसमार अमर्ष उग्रता॥
ये हर्ष के सहित तैंतीस काव्य के हैं।
संचारिभाव, कहते व्यभिचारि भी जिन्हें॥

(१) शृंगार रस

शृंगार में प्रेम का वर्णन होता है। शृङ्गार के दो भेद होते हैं—

(१) सयोग—जब प्रेमी और प्रेमपात्र साथ हों।

(२) विप्रलभ या वियोग—जब प्रेमी और प्रेमपात्र एक दूसरे से दूर हों।

शृङ्गार का—स्थायीभाव—प्रेम।

सचारीभाव—उग्रता, मरण, आलस्य, जुगुप्सा इनको छोड कर शेष २९ सचारीभाव (ऊपर देखो)।

आलम्बन—प्रेम-पात्र (नायक या नायिका)।

उद्दीपन—वसन्त-ऋतु, सुन्दर प्राकृतिक दृश्य, चाँदनी रात, वाटिका, सगीत इत्यादि।

अनुभाव—(सयोग) मुख खिलना, मुसकुराना,

एक टक देखना, हाव-भाव, मधुरालाप आदि। (वियोग) रुदन, विलाप, प्रलाप, निःश्वास आदि।

उदाहरण—

(संयोग शृङ्गार)

(१)

करत बतकही अनुज सन, मन सियरूप लुभान
मुख सरोज मकरन्द छवि करत मधुप इव पान
—रामचरितमानस

(२)

देखन मिस मृग-विहँग-तरु फिरति बहोरि-बहोरि
निरखि-निरखि रघुबीर-छवि बाढ़ी प्रीति न थोरि।
—रामचरितमानस

(विप्रलंभ शृङ्गार)

(१)

अति अप्रिय हुआ है क्यों उसे गेह आना
प्रतिदिन जिसकी ही ओर आँखें लगी हैं
पग हित जिसके मैं नित्य ही हूँ बिछाती
पुलकित पलकों के पाँवड़े प्यार-द्वारा ?
मम उर जिसके ही हेतु है मोम जैसा
निज उर वह क्यों है पाहनों-सा बनाता ?

विलसित जिसमें है मूर्त्ति प्यारी उसी की
वह उस चित की है चेतना क्यों चुराता ?

विलसित उर में है जो सदा देवता लौं
वह निज उर में है ठौर भी क्यों न देता ?

नित वह कलपाता है मुझे कान्त हो क्यों
जिस बिन कल पाते हैं नहीं प्राण मेरे ?

—प्रिय-प्रवास

(२)

अति मलीन वृषभानु-कुमारी
अधमुख रहति, उरध नहिं चितवति,
ज्यों गथ हारे थकित जुआरी
छूटे चिकुर बदन कुम्हिलानो,
ज्यों नलिनी हिमकर की मारी
हरिसंदेस सुनि सहज मृतक भई,
इक बिरहिनि दूजे अलि जारी
सूरश्याम बिनु यों जीवति हैं
ब्रजवनिता सब स्याम दुलारी

—सूरसागर

(३)

राम-बियोग कहा, सुनु सीता ।
मो कहँ सकल भयउ बिपरीता
नूतन किसलय मनहु कृसानू ।
काल-निसा सम निसि, ससि भानू
कुबलय-बिपिन कुंत-बन सरिसा ।
बारिद तप्त तेल जनु बरिसा
जे हित करत रहे सोइ पीरा ।
उरग-साँस सम त्रिबिध समीरा

—तुलसीदास

(४)

मनमोहनतें बिछुरी जबसों तन आँसुनसों सदा धोवती हैं ।
हरिचंद जू प्रेम के फंद परीं कुल की कुल लाजहि खोवती हैं ।।
दुख के दिन को कोउ भाँति बितै बिरहागम रैन सँजोवती हैं ।।
हम हीं अपुनी दसा जानैं सखी निसि सोवती है किधौं रोवती हैं ।।

—भारतेंदु हरिश्चंद्र

(२) हास्य रस

स्थायीभाव—हास ।

संचारीभाव—हर्ष, श्रम, चपलता, आलस्य ।

आलंवन—विदूपक या कोई विरूपाकृति, जिसको देख-सुन कर हँसी आवे ।

उद्दीपन—आलंवन की विकृत वेश-रचना, विचित्र चेष्टा, वचन आदि ।

अनुभाव—मुसकुराना, हँसना, लोटपोट हो जाना, आँसू आ जाना ।

उदाहरण—

(१)

अचल होहि अहिवात तुम्हारा
जव तक टाइप घिसैं न सारा ।
जीवित रहैं वधूवर प्यारे
कागज फटैं न जव तक सारे ।
रहै प्रीति निसि वासर पक्की
जव तक चलै भूत की चक्की ।

—चिड़ियाघर

(२)

घोड़ा गिर्‌यो घर वाहर ही महाराज कछू उठवावन पाऊँ ।
ऍड़ो पर्‌यो विच पैंड़ाइ माँझ चलैं पग एक ना कैसे चलाऊँ ॥

होय कहारनको जु पै आयसु डोली चढ़ाय यहाँ लगि लाऊँ।
जीन धरौं कि धरौं तुलसी मुख देहुँ लगाय कि राम कहाऊँ॥

(३)

कारीगर कोऊ करामात कै बनाइ लायो,
लीन्ही दाम थोरो जानि नई सुघरई है।
रायजू को रामजू रजाई दीन्ही राजी ह्वै कै,
सहर में ठौर-ठौर सोहरत भई है॥
'बेनी कवि' पाइकै अघाइ रहे घरी द्वैक,
कहत न बनै कछू ऐसी मति ठई है।
साँस लेत उड़िगो उपल्ला औ भितल्ला सबै
दिन द्वै के बाती हेत रुई रह गई है॥

(२) करुण रस

करुण रस मे शोक का वर्णन होता है।

स्थायी भाव—शोक
संचारी भाव - मोह विषाद जड़ता उन्माद व्याधि ग्लानि
निर्वेद
आलम्बन - प्रिय वस्तु का नाश, प्रिय व्यक्ति की मृत्यु या कष्ट।

निठुर फल मिला क्या व्यर्थ पीड़ा दिये से ?
इस नव लतिका की गोद सूनी किये से ? ॥२॥
सहृदय जन के जो कंठ का हार होता ।
मुदित मधुकरी का जीवनाधार होता ॥
वह कुसुम रँगीला धूल में जा पड़ा है ।
नियति, नियम तेरा भी बड़ा ही कड़ा है ॥३॥

(४) वीर रस

वीर रस में उत्साह को उत्पन्न करनेवाली बातों का वर्णन होता है। वीर रस तीन प्रकार का होता है—

(१) युद्धवीर—जब लड़ने का उत्साह हो।
(२) दानवीर—जब याचक आदि को दान देने का उत्साह हो।
(३) दयावीर—जब दीनों पर दया करने का उत्साह हो।

स्थायीभाव—उत्साह।

संचारीभाव—आवेग, गर्व, असूया, अमर्ष, उग्रता।

आलंबन—शत्रु या प्रतिपक्षी याचक, कवि दीन, दुःखित।

उद्दीपन—शत्रु का उत्कर्ष, उसकी ललकार, मारू बाजा, वीरों की हुङ्कार, दीन का दुःख या दारिद्र्य, याचक की प्रशंसा आदि।

अनुभाव—अंगस्फुरण।

उदाहरण—

(१) युद्धवीर

(१)

जय के दृढ़ विश्वास-युक्त थे दीप्तिमान जिनके मुखमंडल।
पर्वत को भी खंड-खंड कर रज-कण देने को चंचल॥
फड़क रहे थे अति प्रचंड भुज-दंड शत्रुमर्दन को विह्वल।
ग्राम-ग्राम से निकल-निकलकर ऐसे युवक चले दल के दल॥

—रामनरेश त्रिपाठी

(२)

सुन सारथी की यह विनय बोला वचन वह वीर यों।
करता घनाघन गगन में निर्घोष अति गम्भीर ज्यों।
हे सारथे, हैं द्रोण क्या, आवें स्वयं देवेन्द्र भी।
वे भी न जीतेंगे समर में आज क्या, मुझसे कभी।
मैं सत्य कहता हूँ सखे, सुकुमार मत जानो मुझे
यमराज से भी युद्ध को प्रस्तुत सदा जानो मुझे।
है और की तो बात ही क्या—गर्व मैं करता नहीं—
मामा तथा निज तात से भी समर में डरता नहीं।

— जयद्रथ-वध

(३)

समाचार सब सुने निषादा । हृदय विचार करइ सविषादा
कारन कवन भरतु बन जाहीं । है कछु कपटभाउ मन माहीं
जौंपै जिय न होति कुटिलाई । तो कत लीन्ह संग कटकाई
का आचरजु भरत अस करहीं । नहिं विषबेलि अमियफल फरहीं

अस विचारि गुह ग्याति सन कहेउ, सजग सब होउ ।
हथबाँसहु बोरहु तरनि, कीजिय घाटारोहु ॥

होहु सँजोइल रोकहु घाटा । ठाटहु सकल मरइ के ठाटा
सनमुख लोह भरत सन लेऊँ । जियत न सुरसरि उतरन देऊँ
समर मरन, पुनि सुरसरि-तीरा । रामकाजु, छनभंगु सरीरा
भरत भाइ नृप, मैं जन नीचू । बड़े भाग अस पाइय मीचू
भलेहि नाथ, सब कहहि सहरषा । एकहिं एक बढ़ावै करषा
अँगरी पहिरि कूँड़ि सिर धरहीं । फरसा बाँस सेल सम करहीं
एक कुसल अति ओड़न खाँड़े । कूदहि गगन मनहुँ छिति छाँड़े
निज निज साजु समाज बनाई । गुह राउतहिं जुहारे जाई

भाइहु, लावहु धोख जनि, आज काज बड़ मोहि ।
सुनि सरोष बोले सुभट—बीर अधीर न होहि ॥

—'रामचरितमानस'

(२) दानवीर

(१)

हाथ गह्यो प्रभु को कमला कहै—नाथ, कहा तुमने चित धारी ?
तंदुल खाय मुठी दुइ दीन कियो तुमदे दुइ लोक-विहारी ।
खाय मुठी तिसरी अब नाथ, कहा निज वास की आस बिसारी ?
रंकहि आप समान कियो अब चाहत आपहि होन भिखारी ।

—नरोत्तमदास

(२)

संपति सुमेर की कुबेर की जु पावै ताहि
तुरत लुटावत विलंब उर धारै ना ।
कहै 'पदमाकर' सुहेम हय हाथिन के
हलके हजारन के बितर विचारै ना ॥
दीन्हें गज ब्रक्स महीप रघुनाथराय
पाय गज धोखे कहै काहू देय डारै ना ।
याही डर गिरिजा गजानन को गोय रही
गिरि तें गरे तें निज गोद तें उतारै ना ॥

—पद्माकर [illegible]

(२)

निपीड़िता भू ब्रज की विलोक के
अतीव उत्पीड़न से खलेन्द्र के।
दिनेक आता लख सामने उसे
सकोप बोले बलभद्र-बंधु यों॥
सुधार-चेष्टा सब व्यर्थ होगई
न त्याग तूने कु-प्रवृत्ति का किया।
अतः यही है अब युक्ति उत्तमा
तुझे निपातूँ भव-श्रेय-हेतु मैं॥
अतः अरे पामर, सावधान हो
समीप तेरे अब काल आ गया।
न पा सकेगा खल, आज त्राण तू
सम्हाल मैं हूँ तुझको निपातता॥

—'प्रिय-प्रवास'

(३)

सबन के ऊपर ही ठाड़ो रहिबे के जोग
ताहि खड़ो कियो जाय जारिनके नियरे।

जानि गैर-मिसिल, गुसैला गुस्सा धारि उर,
　　कीन्हो ना सलाम, ना वचन बोले सियरे ॥
भूषन भनत, महावीर वलकन लागो,
　　सारी पातसाही के उड़ाय गये जियरे।
तमकते लाल मुख सिवा को निरखि भये
　　स्याह मुख नौरँग, सिपाह मुख पियरे ॥

—भूषण

(६) भयानक रस

भयानक रस में भयजनक बातों का वर्णन होता है।

स्थायीभाव—भय।

सञ्चारी—आवेग, दैन्य शंका, मृत्यु, मोह, त्रास, मूर्च्छा, उन्माद।

आलंबन—भीषण दृश्य जिनको देखकर भय लगे।

उद्दीपन—आलंबन की भयङ्करता।

अनुभाव—कँपकँपी होना घिग्घी बँध जाना मुख का रंग उड़ जाना आदि

उदाहरण—

(१)

चकित चकत्ता चौंकि चौंकि उठै बार बार,
　　दिल्ली दहसति, चितै चाह करखति है।

बिलखि बदन बिलखात बिजैपुर-पति
फिरत फिरंगिन की नारी फरकति है ॥
थर-थर काँपत कुतुबसाह गोलकुंडा
हहरि हबस भूप भीर भरकति है ।
राजा सिवराज के नगारन की धाक सुनि
केते बादसाहन की छाती दरकति है ॥

—भूषण कवि

(२)

समस्त सर्पों सँग श्याम ज्यों कढ़े
कलिन्द की नंदिनि के सुश्रंक से ।
खड़े किनारे जितने मनुष्य थे
सभी महा शंकित भीत हो उठे ॥१॥
हुए कई मूर्च्छित घोर त्रास से
कई भगे मेदिनि मे गिरे कई ।
हुई यशोदा अति ही प्रकंपिता
ब्रजेश भी व्यस्त समस्त होगये ॥२॥

— प्रिय-प्रवास'

(३)

लपट कराल ज्वाल-जाल-माल दहूँ दिसि
धूम अकुलाने, पहिचानैं कौन काहि रे।
पानी को ललात, बिललात, जरे जात गात,
परे पाइमाल जात भ्रात, तू निबाहि रे॥
प्रिया तू पराहि नाथ नाथ तू पराहि बाप
बाप तू पराहि पूत पूत तू पराहि रे।
तुलसी बिलोकि लोग व्याकुल बिहाल कहैं—
लेहि दससीस अब बीस चख चाहि रे॥
—तुलसीदास

(७) वीभत्स रस

वीभत्स रस में मांस, रुधिर, घाव, पीब आदि घृणाजनक बातों का वर्णन होता है।

स्थायी भाव—घृणा।

सञ्चारीभाव—मोह, असूया, मूर्च्छा, आवेग, व्याधि, मरण।

आलम्बन—रक्त, मांस, अस्थि, फूहड़पन आदि घृणित चीज

उद्दीपन—उनकी गंध इत्यादि

अनुभाव—मुँह बिचकाना, थूकना, आँख-नाक बन्द करना, रोमांच होना

उदाहरण—

ओझरी की झोरी काँधे, आँतनि की सेल्ही बाँधे,
मुंड के कमंडलु, खपर किये कोरि कै,।
जोगिनी झुटुंग झुंड झुंड बनी तापसी सी
तीर तीर बैठी सो समर सरि खोरि कै॥
सोनित सों सानि सानि गूदा खात सतुआ से
प्रेत एक पियत बहोरि घोरि घोरि कै।
तुलसी बैताल भूत साथ लिये भूत-नाथ
हेरि हेरि हँसत हैं हाथ-हाथ जोरि कै॥

—तुलसीदास

(२)

सिर पै बैठ्यो काग आँख दोउ खात निकारत।
खींचत जीभहि स्यार अतिहि आनँद उर धारत॥
गिद्ध जाँघ कहँ खोदि-खोदि कै मांस उचारत।
स्वान अंगुरिन काटि-काटि कै खान-विचारत॥
बहु चील नोचि लै जात तुच, मोद-मढ़्यो सबको हियो।
मनु ब्रह्मभोज जिजमान को आज भिखारिन्ह कहँ दियो॥

—भा० हरिश्चन्द्र

(८) अद्भुत रस

अद्भुत रस में आश्चर्यजनक बातों का वर्णन किया जाता है।

स्थायीभाव—विस्मय।

सञ्चारी—तर्क, सन्देह, मोह, हर्ष, जड़ता, आवेग।

आलंबन—आश्चर्यजनक व्यक्ति, वस्तु, घटना या दृश्य आदि।

उद्दीपन—आलंबन की महिमा व वैचित्र्य।

अनुभाव—रोमांच होना, स्तम्भित हो जाना, टकटकी लगाकर देखना। वाह वाह करना।

उदाहरण—

(१)

हो पूर्ण जब तक पार्थ प्रति प्रभु का कथन ऊपर कहा।
तब तक महा अद्भुत हुआ यह एक कौतुक-सा, अहा!
मार्त्तण्ड अस्ताचल निकट घनमुक्त-सा देखा गया।
है जान सकता कौन हरि का कृत्य नित्य नया नया?
इस स्वप्न के-से दृश्य से सब शत्रु विस्मित रह गये।
कर्तव्य-मूढ़ समान वे नैराश्य-नद में बह गये॥
उस काल उनका तेज मानो पार्थ को ही मिल गया।
तब तो सदा से सौगुना मुख शीघ्र उनका खिल गया॥

—'जयद्रथ-वध'

(२)

दाहिने वेद पढ़ैं चतुरानन, सामुहे ध्यान महेस धर्‌यो है।
बाएं दुओ कर जोरि सुसेवक देवन साथ सुरेश खर्‌यो है॥
एतनि बीच अनेक लिये धन पायनि आनि कुबेर पर्‌यो है।
देखि बिभौ अपनौ सपनौ बपुरौ वह बाभन चौंकि पर्‌यो है॥

—नरोत्तमदास

(९) शान्त रस

शान्त रस में मानसिक शान्ति एवं सासारिक विरक्ति तथा ईश्वरभक्ति आदि का वर्णन होता है।

स्थायीभाव—शम ।

सचारीभाव—हर्ष, धृति, यति, स्मृति, निर्वेद।

आलबन—सत्सगति, पवित्र आश्रम, तीर्थ, मृतक।

उद्दीपन—उपदेश, कथा-श्रवण, पवित्र वातावरण।

अनुभाव—रोमाच, पश्चात्ताप आदि।

उदाहरण—

(१)

मन पछितैहै अवसर बीते
दुर्लभ देह पाइ हरिपद भजु करम वचन अरु हीते
सहसबाहु दसवदन आदि नृप बचे न काल बलीते
हम-हम करि धन-धाम सँवारे, अंत चले उठि रीते

उदाहरण

(१)

हरि अपने आगे कछु गावत
तनक-तनक चरननसों नाचत मनहीं-मनहिं रिझावत
बाँह उँचाइ काजरी-धौरी गैयन टेरि बुलावत
माखन तनक आपने कर लै तनक बदन में नावत
कबहुँ चितै प्रतिबिंब खंभ में लवनी लिये खवावत
दुरि देखत जसुमति यह लीला हरख अनंद बढ़ावत

—सूरदास

(२)

मैया, कबहिं बढ़ैगी चोटी
बहुत बार मोहि दूध पियत भई यह अजहूँ है छोटी
काचो दूध पियावत पचि-पचि देत न माखन रोटी
सूरस्याम चिरजिवौ दोउ भैया हरि हलधर की जोरी

जो पसु हौं तो कहा बसु मेरो
चरौं नित नंद की धेनु मँझारन ॥
पाहन हौं तौ वही गिरिको जो
भयो ब्रज-छत्र पुरंदर-धारन ।
जो खग हौं तौ बसेरो करौं मिलि
कालिंदी-कूल कदंब की डारन ॥

—रसखान ।

(१०) वात्सल्य रस

वात्सल्य रस मे संतान, शिष्य, अनुज आदि के प्रति जो प्रेम होता है उसका वर्णन होता है ।

स्थायीभाव—स्नेह

संचारीभाव—हर्ष आदि

आलंबन—संतान, शिष्य, अनुज आदि

उद्दीपन—आलंबन की चेष्टाये, गुण आदि

अनुभाव—मुख प्रसन्न होना, चूमना, बलैया लेना, सिर पर हाथ फेरना आदि ।

उदाहरण

(१)

हरि अपने आगे कछु गावत
तनक-तनक चरननसों नाचत मनहीं-मनहिं रिझावत
बाँह उँचाइ काजरी-धौरी गैयन टेरि बुलावत
माखन तनक आपने कर लै तनक वदन में नावत
कबहुँ चितै प्रतिबिंब खंभ में लवनी लिये खवावत
दुरि देखत जसुमति यह लीला हरख अनंद बढ़ावत

—सूरदास

(२)

मैया, कबहिं बढ़ैगी चोटी
बहुत बार मोहि दूध पियत भई यह अजहूँ है छोटी
काचो दूध पियावत पचि-पचि देत न माखन रोटी
सूरस्याम चिरजिवौ दोउ भैया हरि-हलधर की जोटी

—सूरदास

सूचनिका